



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

“
कूआ तणो डेडक कूए रंजे,
तिण सायर लहर न दीठ।
ज्युं साधां री संगत करी नहीं,
त्याने लागें पाखंड मत मीठ।।
कुएं का मेंढक कुएं में राजी रहता है,
क्योंकि उसने सागर की लहर नहीं देखी।
जिन्होंने साधुओं को नहीं देखा है उन्हें
पाखंड का मत मीठा लगता है।
- आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 22 • 03 मार्च - 09 मार्च, 2025 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 01-03-2025 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये



कर्तव्य के बोध और
सम्यक् निर्वहन से प्राप्त
होती है सफलता :
आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02



भक्ति और विनय
से प्राप्त हो सकती है
शक्ति : आचार्यश्री
महाश्रमण

पेज 16

Address
Here

मोहनीय कर्म पर विजय प्राप्त करना है संयम का मूल उद्देश्य : आचार्यश्री महाश्रमण

तलवाना।

24 फरवरी, 2025

मांडवी में दो दिवसीय प्रवास पूर्ण कर भैक्षव गण सरताज आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 12 किमी विहार कर तलवाना स्थित श्री मामल भवन पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय में पूज्यश्री ने फरमाया कि जय और पराजय जीवन के दो पहलू हैं। दुनिया में कोई जीतता है तो कोई हारता है, लेकिन शास्त्रों में दो प्रकार की जय का उल्लेख मिलता है - सामान्य जय और परम जय।

आचार्यप्रवर ने समझाया कि यदि कोई योद्धा रणभूमि में दस लाख सैनिकों को अकेले पराजित कर दे, तो वह उसकी जय कहलाती है। लेकिन यदि कोई अपनी स्वयं की आत्मा को जीत ले, तो वह परम जय कहलाती है। परम जय इसलिए श्रेष्ठ मानी गई है क्योंकि इसमें व्यक्ति को 'मोहनीय कर्म' को पराजित करना होता है, जो अत्यंत कठिन कार्य है।

जैन तत्त्वविद्या के अनुसार आठ प्रकार के

दसवां बोल : कर्म आठ

1. ज्ञानावरणीय कर्म
2. दर्शनावरणीय कर्म
3. वेदनीय कर्म
4. मोहनीय कर्म
5. आयुष्य कर्म
6. नाम कर्म
7. गोत्र कर्म
8. अंतराय कर्म

कर्म बताए गए हैं, जिनमें से एक प्रमुख कर्म मोहनीय कर्म है। इसका प्रभाव अत्यंत व्यापक होता है। जो इस कर्म को क्षीण कर देता है,

वही परम विजयी कहलाता है। गुस्सा, अहंकार, घृणा, माया, लोभ, राग-द्वेष, मिथ्यादर्शन आदि सभी मोहनीय कर्म के परिवार के सदस्य होते हैं।

भगवान महावीर ने कठोर साधना द्वारा मोहनीय कर्म का नाश कर दिया था। केवलज्ञान प्राप्त करने से पूर्व, मोहनीय कर्म का नाश अनिवार्य होता है।

जो साधु परिवार, सांसारिक सुख-सुविधाएँ और भौतिकता को त्याग कर संयम और तपस्या के मार्ग पर चलते हैं, उनका मुख्य लक्ष्य मोह को जीतना होता है। अध्यात्म की साधना में अग्रसर होना और मोहनीय कर्म से मुक्त होने का प्रयास करना, एक साधु के लिए सर्वोच्च विजय की ओर बढ़ने का मार्ग है। आचार्यश्री ने कहा कि यदि हम कभी परम जय को प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें अपनी आत्मा को जीतने का संकल्प लेना होगा। जो आत्मा को जीत लेता है, वह इन्द्रियों और कषायों को भी जीत सकता है।

साधु जीवन में चित्त की समाधि और मोह पर विजय अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। भौतिक संसाधन केवल सुविधाएँ प्रदान कर सकते हैं, परंतु सच्ची शांति केवल अध्यात्म की साधना से ही प्राप्त की जा सकती है। (शेष पेज 14 पर)

भक्ति और समर्पण हैं आत्मिक विकास के उत्तम सूत्र : आचार्यश्री महाश्रमण

मांडवी।

22 फरवरी, 2025

कच्छ यात्रा के अंतर्गत तेरापंथ के नायक आचार्यश्री महाश्रमणजी का द्वि दिवसीय प्रवास हेतु मांडवी में पधारना हुआ। आचार्य प्रवर ने अमृत देशना देते हुए फरमाया कि चौबीस तीर्थकरों को नमस्कार किया गया है—भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर पर्यंत, वर्तमान अवसर्पिणी काल के भरत क्षेत्र के समस्त तीर्थकरों को। इस नमन में भक्ति की भावना अंतर्निहित है। परमात्मा बन चुके वीतराग और सिद्धों



के प्रति भक्ति श्रद्धा और समर्पण को पुष्ट करती है। जब व्यक्ति में भक्ति और

समर्पण का भाव प्रबल हो जाता है, तो वह कठिन कार्य करने के लिए भी सक्षम

हो जाता है।

जैन दर्शन में नमस्कार महामंत्र एक ऐसा महामंत्र है, जिसमें नितांत विशुद्ध आत्माओं को नमन किया गया है। नमस्कार मंत्र का एक महत्वपूर्ण तत्व वीतरागता है। अर्हत पूर्ण वीतराग होते हैं। सिद्ध निर्लेप और निराकार होते हैं, वे अलेश्य-अयोग होते हैं और आठों कर्मों से मुक्त हो चुके होते हैं। वे विशुद्ध आत्मा होते हैं। आचार्य तीर्थकर के प्रतिनिधि और छत्तीस गुणों से युक्त होते हैं। उपाध्याय आगम के ज्ञाता हैं और पाँचवें पद में महाव्रतधारी साधनाशील साधु होते हैं। इन पाँच पदों को अर्हता,

सिद्धि, आचार, ज्ञान और साधना का प्रतीक माना जा सकता है।

इन पाँचों पदों में पूर्णतः या अंशतः वीतरागता विद्यमान होती है। जब हम इन सभी को नमन करते हैं, तो अहंकार का विलय होता है। जिनका हम नमन कर रहे हैं, हमें उनके जैसा बनने का प्रयास भी करना चाहिए। भक्ति से कर्म निर्जरा संभव है, और भक्ति से ही व्यक्ति आत्मिक विकास की ओर अग्रसर हो सकता है।

आचार्यश्री ने कहा कि वही सत्य और निशंक है, जो जिनेश्वरों ने प्रवेदित किया है। (शेष पेज 14 पर)

वास्तविक सुख की प्राप्ति के लिए करें आत्मा से युद्ध : आचार्यश्री महाश्रमण

मांडवी।

23 फरवरी, 2025

मांडवी प्रवास का दूसरा दिन। परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आत्ममंथन का संदेश प्रदान करते हुए फरमाया - दुनिया में समय-समय पर युद्ध होते रहते हैं, युद्ध के कई रूप हो सकते हैं। जैन शास्त्रों में भी युद्ध की बात कही गई है, लेकिन यह बाहरी युद्ध नहीं, बल्कि आंतरिक युद्ध है—अपने आप से संघर्ष करने का युद्ध, आत्मा से युद्ध करने का युद्ध।

आगमकारों ने कहा है - "अपने आप से ही युद्ध करो। बाहरी युद्ध से तुम्हें क्या लेना?" आत्मा का आत्मा से युद्ध किया जाए तो वास्तविक सुख की प्राप्ति हो सकती है। अपने आप से किया गया युद्ध धर्मयुद्ध बन जाता है। यह युद्ध बाहरी पदार्थों के लिए नहीं, बल्कि आध्यात्मिक संपदा प्राप्त करने के लिए लड़ा जाता है।

आत्मयुद्ध के तीन महत्वपूर्ण प्रश्न आचार्यश्री ने कहा कि आत्मयुद्ध तीन मुख्य प्रश्नों पर आधारित होता है:

1. कौन युद्ध करे?
2. किसके साथ युद्ध करें?
3. युद्ध कैसे करे?

1. कौन युद्ध करे?

आगम शास्त्रों में आठ प्रकार की आत्माओं का उल्लेख किया गया है।



इनमें से चारित्र आत्मा, दर्शन आत्मा और शुभ योग आत्मा युद्ध करने में समर्थ हो सकती हैं।

2. किसके साथ युद्ध करें?

युद्ध करना है कषाय आत्मा, अशुभ योग आत्मा और मिथ्यादर्शन आत्मा के साथ। ये आत्मा को नीचे गिराने वाले तत्व हैं। हमें अपने क्रोध, मान, माया और लोभ—इन चार कषायों को परास्त करना होगा।

3. युद्ध कैसे करें?

● क्रोध को उपशम से जीतें - आत्मनिरीक्षण और मौन से क्रोध पर विजय पाई जा सकती है।

● मान को मृदुता से जीतें - ज्ञान का घमंड न करें, शक्ति होते हुए भी क्षमाशील बनें।

● माया को ऋजुता से जीतें - कथनी और करनी में समानता रखने वाला ही सदात्मा कहलाता है।

● लोभ को संतोष से जीतें - गृहस्थ जीवन में जो मिले उसमें संतुष्ट रहें, साधु भी समता और सहनशीलता बनाए रखें।

आचार्यश्री ने समझाया कि भोजन और धन में संतोष रखना चाहिए, लेकिन ज्ञान और अध्ययन में संतोष नहीं रखना चाहिए। आत्मिक उन्नति के लिए निरंतर

प्रयासरत रहना आवश्यक है। ध्यान और जप में भी संतोष न करें, बल्कि सतत अभ्यास करते रहें। जब हम आत्मयुद्ध में विजयी होते हैं, तो परम अवस्था को प्राप्त कर सकते हैं।

इस अवसर पर साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने कहा कि सच्चे गुरु में ज्ञान और गुरुता होती है। वे हमारे अज्ञान का नाश करते हैं और आत्मा से परमात्मा बनने का मार्ग दिखाते हैं। परमात्मा बनने के लिए स्वाध्याय और आत्मचिंतन आवश्यक है। जो व्यक्ति अध्यात्म को जानने और समझने का प्रयास करता है, वही वास्तविक उन्नति की ओर बढ़ता

पन्द्रहवां बोल :
आत्मा आठ

1. द्रव्य आत्मा
2. कषाय आत्मा
3. योग आत्मा
4. उपयोग आत्मा
5. ज्ञान आत्मा
6. दर्शन आत्मा
7. चारित्र आत्मा
8. वीर्य आत्मा

है। संसारपक्ष में माण्डवी से संबद्ध साध्वी मंगलयशाजी ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए गीत का संगान किया। बालक प्रियान और आरव ने अपनी प्रस्तुति दी।

जितेन्द्रभाई डोशी, जिग्नेश भाई शाह, चन्द्रेश भाई, अशोक भाई, मयूरभाई शाह, चिंतनभाई मेहता, भावीनभाई शाह, मेहुलभाई शाह, 'बेटी तेरापंथ की' कोआर्डिनेटर सेजलबेन संघवी, आयुष डोशी, भूमि संघवी ने श्रीचरणों में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। माण्डवी ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

कर्तव्य के बोध और सम्यक् निर्वहन से प्राप्त होती है सफलता : आचार्यश्री महाश्रमण

नवजीवन होम्स, पुनाडी।

20 फरवरी, 2025

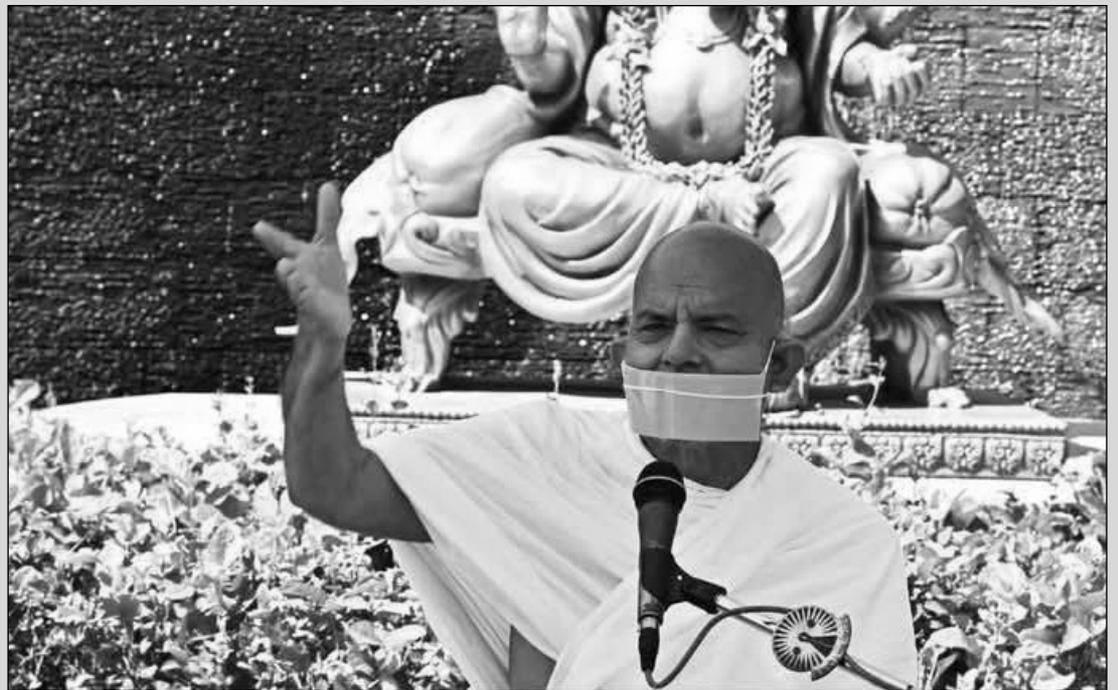
तेरापंथ के गणनायक आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 11 किलोमीटर का विहार कर पुनाडी स्थित नवजीवन होम्स में पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए परम पूज्यवर ने फरमाया कि व्यक्ति के जीवन में कर्तव्य का महत्वपूर्ण स्थान होता है। पहले कर्तव्य का बोध होना, फिर उसका सम्यक् निर्वाह करना—जिस व्यक्ति के जीवन में यह क्रम चलता है, वह अपने जीवन में मध्यम या उच्च कोटि की स्थिति प्राप्त कर सकता है। व्यक्ति को यह बोध होना चाहिए कि उसका कर्तव्य क्या है।

आचार्यश्री तुलसी की एक प्रसिद्ध रचना है—कर्तव्यषट् त्रिंशिका। इसमें कर्तव्य के महत्व को बताया गया है। जो लोग अपने कर्तव्य और अकर्तव्य

को नहीं जानते, उनके साथ कभी ऐसा अनिष्ट हो सकता है, जिसके बारे में उन्होंने कल्पना भी न की हो। ऐसे लोग मनुष्य होते हुए भी पशु के समान होते हैं, क्योंकि वे अपने कर्तव्य से अनभिज्ञ रहते हैं। पशुओं में भी बोध होता है, इसे एक हिरणी के प्रसंग द्वारा समझाया गया है। भक्तामर स्तोत्र में भी कर्तव्य के महत्व को दर्शाया गया है कि कर्तव्य के लिए एक मृग भी शेर से सामना कर सकता है।

साधु का पहला कर्तव्य है—अपने साधुपन का पालन करना। भगवान ऋषभदेव ने भी अपना कर्तव्य समझते हुए लोगों को असि, मसि और कृषि का प्रशिक्षण दिया था। तीर्थंकरों का भी कर्तव्य है—देशना देना और तीर्थ की स्थापना करना।

इसी प्रकार श्रावक हों अथवा सामान्य गृहस्थ, सभी को अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहने का प्रयास करना



चाहिए। जो व्यक्ति कर्तव्य को समझते हैं और उसका पालन करते हैं, वे जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

नवजीवन होम्स की ओर से पूज्यवर के स्वागत में ईशानी मोरबिया और प्रतिमा मोरबिया ने अपनी भावना

अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

प्रस्तावित तेरापंथ भवन की भूमि पर संतों का पदार्पण

गंगाशहर।

शिवा बस्ती में प्रस्तावित तेरापंथ भवन हेतु भूमि दान करने और भवन निर्माण की घोषणा करने वाले पूनमचंद मंजूदेवी बोथरा परिवार के प्रति विचार व्यक्त करते हुए उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी ने कहा कि जो व्यक्ति अपने समाज के लिए सोचता है और कार्य करता है, वह अपने कर्तव्य को पूर्ण करता है।

मुनिश्री ने कहा कि गंगाशहर के श्रावक-श्राविकाओं में सेवा भावना अत्यंत प्रबल है। गंगाशहर सेवा केंद्र में विराजित साध्वियाँ भी यही कहती हैं कि यहाँ किसी भी चीज की कमी नहीं है, सब कुछ गुरुदेव के प्रताप से ही संभव है। उन्होंने कहा कि गंगाशहर की भूमि सेवा भावना से ओत-प्रोत है।

मुनि श्री ने आगे कहा कि पूर्णिमा का यह दिन विशेष है क्योंकि यह उनके और मुनि श्रेयांस कुमार जी के दीक्षा दिवस की वर्षगांठ का दिन है। उन्होंने स्मरण करते हुए कहा कि दोनों ने एक

साथ संयम जीवन धारण किया था। इस अवसर पर मुनि श्रेयांस कुमार जी ने एक विशेष कविता का संगान किया। मुनिश्री ने शिवा बस्ती में प्रस्तावित तेरापंथ भवन के लिए भूमि दान पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि वर्षों से इस क्षेत्र के श्रावकों में भवन के निर्माण की भावना थी, जिसे पूनमचंद मंजूदेवी बोथरा परिवार ने साकार किया। उन्होंने कहा कि जो सुख शांति से प्राप्त होता है, वह किसी भी भौतिक पदार्थ से संभव नहीं है।

मुनि सुमति कुमार जी ने संयमित और असंयमित जीवन के अंतर को समझाते हुए कहा कि संयमित जीवन की महिमा अपार है। उन्होंने मुनि कमल कुमार जी और मुनि श्रेयांस कुमार जी स्वामी के दीक्षा दिवस पर मंगलकामनाएँ व्यक्त कीं।

प्रोफेसर धनपत जैन ने पूनमचंद बोथरा परिवार की प्रशंसा करते हुए कहा कि केवल वीर पुरुष ही इतना बड़ा विसर्जन कर सकते हैं।

तेरापंथी महासभा के संरक्षक जैन

लूणकरण छाजेड़ ने भी पूनमचंद बोथरा परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि यह भवन लंबे समय से शिवा बस्ती के तेरापंथी अनुयायियों की मांग थी, जिसे साकार होते देखना हर्ष का विषय है।

तेरापंथी सभा गंगाशहर के निवर्तमान अध्यक्ष अमरचंद सोनी ने आचार्य श्री महाश्रमण जी से प्राप्त संदेश का वाचन किया और बोथरा परिवार को बधाई देते हुए आभार व्यक्त किया। तेयुप के सहमंत्री एवं शिवा बस्ती निवासी मांगीलाल बोथरा ने भी तेरापंथी सभा और पूनमचंद बोथरा परिवार के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

पूनमचंद बोथरा ने इस निर्णय का श्रेय अपनी पत्नी मंजूदेवी बोथरा को दिया और उनके त्याग व भावना की सराहना की। उन्होंने अपने पुत्रों आसकरण एवं कमल बोथरा के समर्थन का उल्लेख करते हुए जैन लूणकरण छाजेड़ और मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री जतनलाल संचेती ने किया।

मेगा मेडिकल कैंप का सफल आयोजन

गुरुग्राम।

महावीर पार्क स्थित श्री जैन महासभा में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम गुरुग्राम द्वारा मेगा मेडिकल कैंप का सफल आयोजन किया गया। इस कैंप में विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा निःशुल्क चिकित्सा सेवाएं प्रदान की गईं। कैंप में जनरल फिजीशियन, डेंटिस्ट, होम्योपैथ, ऑर्थोपेडिक्स, न्यूरोफिजीशियन, डायटीशियन, स्त्री रोग विशेषज्ञ एवं ऑप्टोमेट्रिस्ट ने अपनी सेवाएं दीं। इसके साथ ही बीपी, शुगर, कैल्शियम, यूरिक एसिड, कोलेस्ट्रॉल एवं ईसीजी जैसी जांचें मुफ्त की गईं, जबकि रक्त परीक्षण पर विशेष छूट प्रदान की गई।

कोरियन तकनीक से प्री थर्मल थैरेपी की सुविधा दी गई और जरूरतमंद मरीजों को निःशुल्क चश्मे व दवाइयां वितरित की गईं। इस कैंप में कुल 300 ओपीडी कंसल्टेशन किए गए।

कार्यक्रम की शुरुआत जे.एम. सिपानी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। उद्घाटन श्री जैन महासभा, महावीर पार्क के अध्यक्ष

सतीश जैन एवं सुभाष जैन की उपस्थिति में हुआ। महावीर इंटरनेशनल से हितेश जैन एवं संत फूलचंद चैरिटेबल हॉस्पिटल के अध्यक्ष अनिल जैन ने भी अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

आयोजन को सफल बनाने में तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ समाज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम का संयोजन टीपीएफ सचिव एवं मेडिकल संयोजक मोहित जैन ने किया। इस अवसर पर TPF गुरुग्राम के अध्यक्ष अरुण जैन, तेरापंथ सभा गुरुग्राम के सचिव जितेंद्र जैन, अभातेयुप कार्यकारिणी सदस्य अंकुर लुणिया, NEC सदस्य अजय संचेती सहित अनेक विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे। आयोजन को सफल बनाने में डॉक्टर्स, महावीर इंटरनेशनल टीम एवं मैक्स लैब्स टीम का महत्वपूर्ण योगदान रहा, जिसके लिए विशेष आभार व्यक्त किया गया। साथ ही, स्वयंसेवकों में TPF गुरुग्राम के कोषाध्यक्ष अवनीश दुग्गड़, संयुक्त सचिव अनुराग जैन एवं अन्य सदस्यों ने सक्रिय भूमिका निभाई।

फिट युवा, हिट युवा के प्रोजेक्ट फोकस के अंतर्गत कार्यक्रम

उदयपुर।

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर एवं श्री राजकीय फतेह उच्च विद्यालय, उदयपुर द्वारा 'फिट युवा, हिट युवा' प्रोजेक्ट फोकस के तहत सूर्य नमस्कार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विद्यालय के अनेक छात्रों सहित तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने भाग लिया। फतेह स्कूल ग्राउंड में प्रारंभ हुए इस आयोजन में विद्यालय के प्रधानाध्यापक चेतन पानेरी ने स्वागत उद्बोधन दिया।

तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष भूपेश खमेसरा ने उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद एवं इसके विभिन्न आयामों की जानकारी दी। उन्होंने सूर्य नमस्कार के महत्व को रेखांकित करते हुए इसे विद्यालय के नियमित अभ्यास में शामिल करने एवं अन्य संस्थाओं में भी इसे अपनाने का

आह्वान किया। इसके अतिरिक्त नेत्रदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु पुस्तक वितरण कर संकल्प पत्र भरवाए गए।

कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के योगेंद्र सिंह भाटी ने किया, जबकि योग प्रशिक्षक डॉ. सतीश चौधरी एवं उनकी टीम ने उपस्थित सभी लोगों को सूर्य नमस्कार का अभ्यास करवाया।

आभार ज्ञापन शिक्षक धर्मेन्द्र सिंह शक्तावत ने किया। इस अवसर पर शिक्षा विभाग से जिला शिक्षा अधिकारी महेंद्र जैन, क्रीड़ा भारती के पदाधिकारी, विधायक प्रतिनिधि जगदीश सुथार, पतंजलि योग समिति से योग गुरु देवेन्द्र अग्रवाल, प्रोफेसर डी. के. गुप्ता सहित विद्यालय संपूर्ण स्टाफ एवं शाला क्रीड़ा संगठन के 20 शारीरिक शिक्षक उपस्थित रहे। अभातेयुप सदस्य संदीप हिंंगड़, परिषद मंत्री साजन मंडोत, पदाधिकारी, कार्यक्रम प्रभारी पंकज बैद, परामर्शक, सदस्य कई गणमान्यजन इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

कैंसर अवेयरनेस सेमिनार का आयोजन

छत्रपति संभाजी नगर। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम छत्रपति संभाजी नगर के तत्वावधान में वूमैस जनरल हेल्थ एंड सर्वाइकल कैंसर अवेयरनेस सेमिनार का आयोजन मैजिक बैग्स के प्रांगण में किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. श्रद्धा परितकर ने महिलाओं की विविध समस्याओं पर सुंदर ढंग से मार्गदर्शन किया। आपने महिलाओं के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को स्वस्थ रखने के अनेक उपाय भी बताए। मुख्य अतिथि का स्वागत तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष डॉ. आनंद नाहर और मैजिक बैग्स के संचालक प्रिंस चोरडिया ने किया। डॉ. आनंद नाहर ने महिलाओं को अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान देने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि एक परिवार तभी स्वस्थ रह सकता है जब परिवार की नारी स्वस्थ है।

डॉ. श्रद्धा परितकर ने उपस्थित महिलाओं की समस्याओं का समाधान किया। फेमिना विंग संयोजिका डॉ. रुपाली नाहर ने कार्यक्रम का सुन्दर संचालन किया। मैजिक बैग्स के संचालक प्रिंस चोरडिया ने सभी का आभार प्रकट किया।

मंत्र प्रेक्षा कार्यशाला का आयोजन

साउथ कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल व प्रेक्षा फाउन्डेशन के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल के द्वारा मंत्र प्रेक्षा कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा हर व्यक्ति सुख का जीवन चाहता है, पर जीवन का सुख नहीं चाहता।

जीवन का सुख मिले बिना व्यक्ति सुखी नहीं बन सकता। सुखी जीवन जीने का महत्वपूर्ण आलंबन है- मंत्र प्रेक्षा। विशिष्ट अक्षरों की संयोजना का नाम मंत्र है। मंत्र शक्ति अचिन्त्य होती है। मंत्र साधना के द्वारा व्यक्ति शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक स्वास्थ्य को प्राप्त हो सकता है। मंत्रों में एक मंत्र

है नमस्कार महामंत्र। यह सभी मंत्रों में श्रेष्ठ मंत्र है।

यह नवकार मंत्र दुःखों को हरण करने वाला, सुखों का प्रदाता, यशदाता और भव सागर का शोषण करने वाला है। यह मंत्र अनंत शक्ति व अनंत ऊर्जा से भरा हुआ है। इसके निरन्तर जप से लब्धियां प्राप्त होती हैं और समस्याओं का समाधान मिलता है। मुनिश्री ने नवकार मंत्र का ध्यान कराया।

मंगलाचरण साउथ कोलकाता तेरापंथ महिला की बहनों ने नवकार गीत के साथ किया। स्वागत भाषण साउथ कोलकाता तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा पदमा कोचर ने किया, वंदना जैन ने प्रेक्षाध्यान की जानकारी दी। आभार ज्ञापन मंत्री अनुपमा नाहटा ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुणाल कुमार जी ने किया।



संक्षिप्त खबर

कैंसर जागरूकता अभियान

गंगाशहर। अभातेममं द्वारा वर्षभर चलाए गए कैंसर जागरूकता अभियान के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर ने विभिन्न चरणों में आयोजित कार्यशालाओं के एक चरण को आचार्य तुलसी कैंसर अस्पताल में मरीजों और उनके परिजनों के साथ साझा किया। उन्हें समझाया गया कि कैंसर का इलाज कठिन जरूर है, लेकिन असंभव नहीं। मरीजों को प्लास्टिक, अखबार और फॉयल पेपर के उपयोग से होने वाले दुष्परिणामों की जानकारी देकर इनके उपयोग से बचने की सलाह दी गई। मंडल की बहनों ने स्वास्थ्य संबंधी कुछ अनुप्रेक्षाएं एवं कायोत्सर्ग का अभ्यास कराया। वहाँ उपस्थित डॉक्टरों को इस अभियान की जानकारी दी गई, जिसे उन्होंने सराहा और भविष्य में संयुक्त कार्यशालाएं आयोजित करने का आश्वासन दिया।

डॉ. नीति शर्मा ने अस्पताल के मुख्य द्वार पर सुरक्षा कर्मियों के माध्यम से प्लास्टिक, अखबार और फॉयल पेपर में खाने-पीने का सामान लाने वालों की जांच करवाने और इसे रोकने का आश्वासन दिया। डॉ. पंकज टांटिया ने बच्चों के वैक्सीनेशन की जानकारी प्रदान की। पैलिएटिव यूनिट के डॉक्टरों ने जीवन के अंतिम चरण में पहुंचे मरीजों को प्रेरित करने के तरीकों पर चर्चा की। कार्यशाला के सफल आयोजन पर डॉक्टरों, अध्यक्ष और मंत्री द्वारा परस्पर आभार व्यक्त किया गया। इस कार्यशाला में अध्यक्ष संजु लालाणी, पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य कविता चोपड़ा, सरोज भंसाली एवं साधारण सदस्य शांति सेठिया और सरिता आंचलिया ने अपनी सेवा प्रदान की।

ज्ञानार्थियों ने सीखी मौलिक मर्यादाएं

इचलकरंजी। ज्ञानशाला में ज्ञानार्थियों के साथ मर्यादा महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बच्चों को तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना, मर्यादा निर्माण तथा मर्यादा महोत्सव के महत्व की जानकारी दी गई। ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के निर्देशानुसार भिक्षु स्वामी की मौलिक मर्यादाओं पर आधारित रोचक खेल भी आयोजित किए गए, जिनके माध्यम से बच्चों को पाँच मौलिक मर्यादाएँ सीखने का अवसर मिला।

भक्तामर जप अनुष्ठान का आयोजन

राजाजी का करेड़ा। साध्वी कीर्तिलता जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ भवन में भक्तामर जप अनुष्ठान का आयोजन किया गया। साध्वी शांतिलता जी ने त्रिपदी वंदना करवाते हुए आचार्य मानतुंग द्वारा रचित भक्तामर स्तोत्र को एक चमत्कारिक एवं प्रभावशाली स्तोत्र बताया। साध्वी पूनमप्रभा जी ने पूरे स्तोत्र का सामूहिक पाठ करवाते हुए विभिन्न पद्यों की महिमा बताई।

साध्वी कीर्तिलता जी ने उपसंहार करते हुए कहा कि भक्तामर स्तोत्र में जो मंत्र हैं, जो उनकी साधना तन्मयता एवं एकाग्रता से करता है, वह निश्चित रूप से फल प्राप्त कर सकता है। अनुष्ठान में कुल 26 जोड़ों ने जप किया।

कायोत्सर्ग कार्यशाला का आयोजन

कोयंबटूर। अभातेममं एवं प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल कोयंबटूर ने कायोत्सर्ग कार्यशाला का आयोजन किया। स्थानीय मंडल अध्यक्ष मंजू सेठिया ने कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। प्रेक्षा प्रशिक्षिका मधु बांठिया ने अत्यंत सरल और प्रभावी तरीके से कायोत्सर्ग के आध्यात्मिक, शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक लाभों के बारे में बताया। कार्यशाला में आधे घंटे का कायोत्सर्ग अभ्यास भी कराया गया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री सुमन सुराणा ने किया। कार्यशाला में कुल 13 सदस्य उपस्थित रहे।

तपस्या का मुख्य लक्ष्य हो कर्म निर्जरा

गंगाशहर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में मुनि श्रेयांस कुमार जी व मुनि नमि कुमार जी की तपस्या का वर्धापन किया गया। मुनि कमल कुमार जी ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि मुनि श्रेयांस कुमार जी ने चंद दिनों में तीन थोकड़े कर नए इतिहास का सृजन किया है। मुनि नमि कुमार जी दीक्षित होने के बाद पहली बार गंगाशहर आए हैं। आज इनके 29 की तपस्या है। पूज्य गुरुदेव का भी संदेश प्राप्त हुआ कि मुनि नमि कुमारजी अपनी अनुकूलता के अनुसार आगे बढ़ सकते हैं इसलिए वे अब कुछ आगे बढ़ने की भावना प्रस्तुत कर रहे हैं। तपस्या में मुनि सुमति कुमार

जी आदि संतों का महनीय सहयोग प्राप्त हुआ, जिससे मेरा कई क्षेत्रों में भ्रमण संभव हो सका। तपस्या का मुख्य लक्ष्य कर्म निर्जरा होना चाहिए, ताकि शिवपथ प्राप्त करने में विलंब न हो। मुनिश्री ने गीत के माध्यम से दोनों तपस्वियों का वर्धापन किया। मुनि श्रेयांस कुमार जी ने 12 और मुनि नमि कुमार जी ने 30 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

मुनि सुमति कुमार जी ने दोनों तपस्वियों के मनोबल की प्रशंसा करते हुए कहा कि तपस्या से पुराने कर्मों का क्षय होता है। मुनि श्रेयांस कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मुनिश्री का गंगाशहर आगमन सुनकर स्वतः भावना जागृत हुई कि मुनिश्री उग्रविहारी तपोमूर्ति हैं, व मेरे सह-दीक्षित हैं, अतः

मैं उनका स्वागत तपस्या के माध्यम से करूँ और 13, 12 और चोले की तपस्या हो गई। मुनि नमि कुमार जी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि परम पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा से मुझे इस उम्र में दीक्षा प्राप्त हुई। मेरे अग्रगण्य मुनि कमल कुमार जी की प्रेरणा से मैं तपस्या के मार्ग पर अग्रसर हुआ।

कार्यक्रम में मुनि विमलविहारी जी, मुनि प्रबोधकुमार जी, मुनि देवार्थकुमार जी, मुनि आगमकुमार जी, मुनि मुकेशकुमार जी आदि संतों ने मुनि द्वय के साहस और तपस्या की भूरी-भूरी अनुमोदना की। सैकड़ों भाई-बहनों ने सामायिक के बेले, सौ से अधिक उपवास किए और कई परिवारों ने दश-पचखाण करके तपस्या की अनुमोदना की।

मंत्र में अचिंत्य शक्ति निहित होती है

टॉलीगंज।

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में, मंत्रों के साथ जप और प्रेक्षाध्यान का अद्भुत प्रयोगात्मक कार्यक्रम 'मंत्रोत्सव-1' श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा टॉलीगंज द्वारा साउथ सिटी इंटरनेशनल स्कूल ऑडिटोरियम में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुनि जिनेश कुमार जी ने विभिन्न मंत्रों का जप करते हुए नमस्कार महामंत्र का ध्यान कराया। इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए उन्होंने

कहा— विशिष्ट अक्षरों की संयोजना का नाम मंत्र है। मंत्र एक कवच, एक प्रतिरोधात्मक शक्ति और एक सशक्त दुर्ग के समान है। मंत्र शब्दात्मक होता है और उसमें अचिंत्य शक्ति निहित होती है, जिसके माध्यम से आत्मिक जागरण संभव है। मंत्र विकल्प से निर्विकल्प तक पहुंचने की प्रक्रिया है और सविचार से निर्विचार तक पहुंचने की पद्धति है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि मंत्रों में एक अत्यंत शक्तिसंपन्न विशिष्ट मंत्र है— 'नमस्कार महामंत्र'। इसे महामंत्र इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें

गुणों की पूजा होती है और इच्छाएं शांत होती हैं। इस महामंत्र के जप और ध्यान से बौद्धिक क्षमता का विकास, दुःख मुक्ति और मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होती है।

शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष अशोक पारख ने स्वागत भाषण दिया और मंत्री राजीव दुगड ने आभार व्यक्त किया। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभा, महिला मंडल और तेरापंथ युवक परिषद का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

त्रिदिवसीय प्रेक्षा प्रशिक्षक कार्यशाला का हुआ आयोजन

सिरियारी।

त्रिदिवसीय प्रेक्षा प्रशिक्षक कार्यशाला की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से मुनि श्री धर्मेण कुमार जी द्वारा हुई।

कार्यशाला में मुंबई से 21 प्रशिक्षकों की उपस्थिति रही। इस कार्यशाला में विशेष उपस्थिति मुंबई से समागत वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक एन.सी.जैन, वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षिका मालती जैन एवं मुद्रा विज्ञान विशेषज्ञ वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक पारस दुगड की रही। संस्थान के मुख्य प्रबंधक महावीर कुमार द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। उद्घाटन सत्र में

मुनि धर्मेणकुमार जी द्वारा मंत्र साधना में महाप्राण ध्वनि के साथ मंत्र प्रेक्षा का प्रयोग करवाया गया एवं मंच का सुचारू व कुशल संचालन कार्यशाला व्यवस्थापक गौरव बरमेचा द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन पवन गादिया द्वारा किया गया।

प्रशिक्षण सत्र में कार्यशाला में प्रणव ध्यान, अन्वत्य अनुप्रेक्षा (भेद विज्ञान) एवं कायोत्सर्ग के प्रयोगों के साथ मुनिश्री ने 7 वर्ष एवं 21 वर्ष की आगामी उल्लेखनीय उत्तरोत्तर आध्यात्मिक विकास हेतु विशेष साधना योजना को भविष्य के लिये मार्गदर्शित किया। इस

कार्यशाला में जैन एवं जैनेतर लोगों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। 21 प्रशिक्षकों के अलावा स्थानीय 7 लोगों ने सहभागिता दर्ज कराई।

प्रतिदिन दिवस का शुभारंभ मंत्र साधना एवं यौगिक क्रियाओं के साथ हुआ एवं प्रतिदिन 3 बार कायोत्सर्ग के प्रयोग में साधकों ने लेटकर, बैठकर एवं खड़े होकर विशेष 5 चरणों का प्रयोग करते हुए भेद विज्ञान की अनुभूति की।

मुनिश्री ने प्रेक्षाध्यान के पांच आधार स्तंभों भावक्रिया, प्रतिक्रिया विरति, मैत्री, मिताहार, और मितभाषण का जीवन में महत्व बताया।

रक्तदान शिविर के विभिन्न आयोजन

जयपुर। 76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर एवं रेलवे सुरक्षा बल, जयपुर मंडल (उत्तर पश्चिम रेलवे) के संयुक्त तत्वावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन RPF गणपति नगर स्टेडियम में किया गया। उत्तर पश्चिम रेलवे के IG PCS ज्योति कुमार सतीजा के साथ अन्य पदाधिकारियों एवं कार्यक्रम की प्रायोजक बिमला दुगड़ (कांतिकुमार दुगड़ मेमोरियल ट्रस्ट) का परिषद् की ओर से स्वागत किया गया। शिविर में कुल 51 यूनिट रक्त का संग्रहण शेखावटी ब्लड सेन्टर द्वारा किया गया। कार्यक्रम में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल जयपुर शहर की अध्यक्ष नीरू मेहता, तेयुप जयपुर के अध्यक्ष गौतम बरड़िया, पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम की कुशल संयोजना में मुख्य संयोजक करण नाहटा, संयोजक रवि छाजेड़, प्रवीण बोथरा, शरद बरड़िया, जयंत भूरा का श्रम उल्लेखनीय रहा।

पूर्वांचल-कोलकाता। तेरापंथ युवक परिषद्, पूर्वांचल-कोलकाता ने पी. एस. एकजोरा ओनर्स एसोसिएशन के सहयोग से अपार्टमेंट के कम्युनिटी हॉल में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। शिविर में परिषद् के उपाध्यक्ष द्वितीय एवं MBDD के पर्यवेक्षक नीरज बेगानी, कार्यसमिति सदस्य एवं किशोर मंडल सदस्यों ने अपनी सेवाएं दी। शिविर के संयोजक विनीत सिंघी, अंकित जैन एवं कॉम्प्लेक्स के फैसिलिटी मैनेजर बिजन मिस्त्री का व्यवस्थित आयोजन हेतु सहयोग प्राप्त हुआ। परिषद् द्वारा ATDC के माध्यम से सभी रक्तदाताओं की निःशुल्क Hb1AC जांच की गई। शिविर में कुल 26 यूनिट रक्त संग्रह हुआ।

अमराईवाड़ी ओढव। अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, अमराईवाड़ी-ओढव द्वारा दो रक्तदान शिविरों का आयोजन किया गया। दोनो शिविर सभा, महिला मंडल, किशोर मंडल के साथ गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ आरंभ हुए। तेयुप अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने सभी रक्तदाताओं, दानदाताओं, सहयोगी संस्था और कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया। मंत्री सुनील चिप्पड़ ने ब्लड बैंकों व डॉक्टर टीम, सरकारी एवं प्रशासनिक अधिकारियों को धन्यवाद दिया। संयोजक दिलीप टोडरवाल, पिन्टू दुगड़, दिनेश टुकलिया, पंकज डांगी, विनोद शाह का सराहनीय श्रम रहा। प्रायोजक मनोज, ललित चिप्पड़ परिवार का परिषद् द्वारा सम्मान किया गया। शिविर में कुल 57 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया।

परिष्कार, खोखरा में आयोजित रक्तदान शिविर में 94 रक्तदाताओं ने स्वेच्छा से रक्तदान किया। शिविर में शाखा प्रभारी कुलदीप नवलखा की भी विशेष उपस्थिति रही। ललित वागरेचा ने ब्लड बैंकों व डॉक्टर टीम, सरकारी एवं प्रशासनिक अधिकारियों के सहयोग के लिए साधुवाद दिया।

अहमदाबाद। तेरापंथ युवक परिषद् अहमदाबाद द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव का आयोजन सिटी सेंटर में किया गया। कैम्प में प्रथमा ब्लड बैंक के सहयोग से 35 यूनिट का कलेक्शन किया गया। कैम्प संयोजक के रूप में कार्यसमिति सदस्य सौरभ टॉटिया और अभिषेक वडेरा ने अपनी सेवाएं दी।

सामाजिक सेवा कार्य

गंगाशहर। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा गंगाशहर द्वारा अपना घर आश्रम, बीकानेर में लौकिक सेवा कार्य के तहत भोजन वितरण किया गया। इस कार्य में तेरापंथी सभा गंगाशहर के उपाध्यक्ष नवरतन बोथरा, पवन छाजेड़, सहमंत्री मांगीलाल लुणिया, संगठन मंत्री शान्ति लाल पुगलिया, मोती लाल ललवाणी, सम्पत बाफना आदि कार्यकर्ताओं ने सहभागिता प्रदान की।

❖ देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बाल पीढ़ी अच्छी होगी तो देश का भविष्य भी सुनहरा बन सकेगा।

— आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन



जैन विधि-अमूल्य निधि



नामकरण संस्कार

■ **जयपुर।** सत्याश्री-सिद्धार्थ भादानी की सुपुत्री, रेणु-संजय भादानी की सुपौत्री का नामकरण संस्कार जयपुर स्थित उनके आवास में 'ह्री' संस्कारक राजेन्द्र बांठिया ने मंगलमय वातावरण में सम्पूर्ण प्रक्रिया को जैन संस्कार विधि से सम्पन्न करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **गुरुग्राम।** पीयूष प्रकाश भूतेडिया के नवनिर्मित आवास का गृह प्रवेश संस्कार संस्कारक अंकुर लुणिया ने विधि पूर्वक संपन्न करवाया।

■ **दिल्ली।** गंगाशहर निवासी दिल्ली प्रवासी शुभकरण बोथरा के नूतन गृहप्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक राजकुमार जैन एवं विशाल सुराना ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **लिलुआ।** सरदारशहर निवासी-लिलुआ प्रवासी हनुमानमल -अंकुश छाजेड़ के पाकुड़िया स्थित कारखाने का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक राकेश राखेचा ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द सम्पन्न करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **गंगाशहर।** स्व. सुरेन्द्र कुमार मालू के सुपुत्र संदीप मालू का शुभ विवाह प्रदीप कुमार महनोत की सुपुत्री दिव्या महनोत के साथ ओसवाल पंचायती भवन में जैन संस्कार विधि से सानंद संपन्न हुआ। जैन संस्कारक पवन छाजेड़, देवेन्द्र डागा और रोहित बैद ने विवाह संस्कार का आयोजन विधि विधान पूर्वक सम्पन्न करवाया।

■ **साउथ हावड़ा।** सरदारशहर निवासी कोलकाता प्रवासी बाबूलाल श्यामसुखा के सुपुत्र अनिल श्यामसुखा का शुभ विवाह लाडनू निवासी इंद्राजमल बांठिया की सुपुत्री प्रिया सुखानी से जैन संस्कार विधि से सम्पादित हुआ। संस्कारक पवन बैगाणी एवं बिरेंद्र बोहरा ने जैन मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम को संपादित कराया।

■ **साउथ हावड़ा।** फतेहपुर शेखावटी निवासी कोलकाता प्रवासी माणक चंद बोहरा के सुपुत्र रवि बोहरा का शुभ विवाह बोंगाई गांव निवासी तरुण मजूमदार की सुपुत्री कावेरी मजूमदार से जैन संस्कार विधि से सम्पादित हुआ। संस्कारक पवन बैगाणी, बिरेंद्र बोहरा एवं हितेंद्र बैद ने मंत्रोच्चार एवं विधि पूर्वक कार्यक्रम को संपादित कराया।

प्रेक्षा ध्यान कल्याण वर्ष पर मंत्र प्रेक्षा कार्यशाला का आयोजन

इरोड। अखिल भारतीय तेरापंथ प्रवाह - शांति और शक्ति की ओर' के महिला मंडल एवं प्रेक्षा फाउंडेशन के अंतर्गत मंत्र प्रेक्षा का आयोजन किया निर्देशन में प्रेक्षा ध्यान कल्याण वर्ष के गया। कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार उपलक्ष में तेरापंथ महिला मंडल इरोड महामंत्र एवं महाप्राण ध्वनि से किया द्वारा फरवरी माह की कार्यशाला 'प्रेक्षा गया। मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। सभी का स्वागत अध्यक्ष पंकी भंसाली एवं आभार ज्ञापन मंत्री पूनम दुगड़ ने किया। कार्यक्रम में मंत्रोच्चार के साथ ध्यान का प्रयोग किया गया।

भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

अहमदाबाद। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् अहमदाबाद द्वारा भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, शाहीबाग में मुनि धर्मरुचि जी, मुनि डॉ. मदनकुमार जी, मुनि जम्बूकुमार जी एवं मुनि मननकुमार जी के सान्निध्य में हुआ। विजय गीत एवं श्रावक निष्ठापत्र के वाचन के पश्चात तेयुप अहमदाबाद के अध्यक्ष पंकज घीया ने अपने स्वागत वक्तव्य में संपूर्ण समाज का स्वागत एवं अभिनंदन किया। मुख्य वक्ता मुनि डॉ. मदनकुमार जी ने विस्तृत रूप में भिक्षु विचार दर्शन की मूल बातें उपस्थित श्रावक समाज के समक्ष प्रस्तुत कीं और प्रत्येक जिज्ञासा का उचित समाधान किया। कार्यशाला को सफल बनाने में कुलदीप नवलखा, रोहित कोठारी एवं राहुल बालर का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम में अहमदाबाद अभातेयुप परिवार के सदस्य, तेयुप अहमदाबाद के पदाधिकारीगण, विभिन्न सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण, समाज के गणमान्य व्यक्ति एवं संभागी उपस्थित रहे। अंत में तेयुप अहमदाबाद के कोषाध्यक्ष कुलदीप नवलखा ने आभार व्यक्त किया।



तेरापंथ धर्मसंघ के 161वें मर्यादा महोत्सव पर विविध आयोजन

सफलता की पहली सीढ़ी है मर्यादा

खामगांव।

मुनि अर्हंतकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा खामगांव द्वारा मुक्तेश्वर आश्रम में 161वां मर्यादा महोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत भिक्षु अष्टकम के संगान से हुई। मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि मर्यादा विकास का सोपान है। अनुशासन और मर्यादा का मार्ग कांटों से भरा हो सकता है, लेकिन जब उस मार्ग को पार किया जाता है, तो हर कांटा फूल बनकर मुस्कुराने लगता है। जो व्यक्ति मर्यादा में नहीं रहता, वह कभी भी स्वतंत्र नहीं हो सकता। मर्यादा का अस्वीकार करना जीवन की पहली हार है, जबकि अनुशासन जीवन का उपहार, श्रृंगार और अलंकार है। मर्यादा समाज की मेरुदंड होती है। इसका तिरस्कार जीवन को व्यर्थ बना देता है। मर्यादा सफलता की जननी है—जिस प्रकार जब तक पानी मर्यादा में रहता है, तब तक पृथ्वी सुरक्षित रहती है, वैसे ही जब तक व्यक्ति मर्यादा में रहता है, तब तक मानवता सुरक्षित रहती है।

आर्य भिक्षु ने मर्यादा का सुंदर कवच बनाकर तेरापंथ धर्म संघ को सुदृढ़ किया। लोग सोचते हैं कि मर्यादा ने उनकी आजादी छीन ली और उन्हें बंधनों में डाल दिया, लेकिन वे यह नहीं समझते कि मर्यादा ही सफलता की पहली सीढ़ी है। अनुशासन जीवन को संवारने और निखारने वाला तत्व है। तेरापंथ धर्म संघ समर्पण, अनुशासन और मर्यादा का पर्याय है। आर्य भिक्षु ने मर्यादाओं का सूत्रपात किया, पूर्ववर्ती आचार्यों ने अपने खून-पसीने से इस धर्म संघ को सींचा, जयाचार्य ने इसे महोत्सव का रूप दिया और आज शांति-दूत युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी मर्यादा की महिमा को दसों दिशाओं में महका रहे हैं। हमें भी मर्यादा में रहकर नए क्षितिज को छूने का प्रयास करना चाहिए।

स्थानकवासी संप्रदाय से समागत साध्वी आशाजी ने कहा कि साधु-संतों की अपनी-अपनी मर्यादा होती है, जो महीनीय होती है। लेकिन तेरापंथ धर्म संघ की मर्यादाएं पूरे विश्व में अद्वितीय और अनुकरणीय

है। मुनि भरतकुमारजी ने मर्यादा विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए, मुनि जयदीप कुमार जी ने मर्यादा के महत्व पर प्रकाश डाला। तेरापंथ महिला मंडल खामगांव द्वारा मर्यादा पर सुंदर शब्द-चित्र प्रस्तुत किया गया।

खामगांव, नागपुर, अकोला, औरंगाबाद और जालना से आए प्रतिनिधियों ने मर्यादा महोत्सव पर संगीतमय प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा खामगांव के अध्यक्ष चेतन चोपड़ा ने अतिथियों का स्वागत किया। नागपुर से अरूणा नखत, तेरापंथ युवक परिषद मंत्री अंकुर बोरड़ और खामगांव से श्रेयांश चोपड़ा ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में नागपुर तेरापंथ सभा सहसचिव विकास बुच्चा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद के पदाधिकारी एवं आस-पास के विभिन्न स्थानों से आए सैकड़ों श्रावक-श्राविका उपस्थित थे। मंच संचालन और आभार प्रदर्शन तेरापंथ सभा खामगांव के मंत्री संजय छल्लानी ने किया।

मर्यादा- महोत्सव ऐतिहासिक दस्तावेज

लुधियाना।

साध्वी कनकरेखाजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्वावधान में 161वां मर्यादा महोत्सव भव्य रूप से आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीवृंद के मर्यादा संगान की सुमधुर स्वर लहरियों के साथ हुआ। लुधियाना क्लब हाउस का विशाल हॉल श्रद्धालुओं की अपार उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रहा था।

साध्वीश्री ने अपने वक्तव्य में श्रद्धालु परिषद को संबोधित करते हुए कहा— 'आचार्य भिक्षु ने आचार शिथिलता के निषेध हेतु धर्मक्रांति की, जिसका आधार बनी मर्यादा। इस मर्यादा पथ का अनुसरण करते हुए श्रद्धालुजन आज भी अभिभूत हो रहे हैं।' उन्होंने आगे कहा— 'एक आचार, एक विचार, और एक आचार्य की कुशल अनुशासना से तेरापंथ का यह पुष्पित-पल्लवित चमन खिला हुआ है। इस धर्मसंघ में हम देख रहे हैं कि लोकतंत्र में एकतंत्र की मर्यादा एक सुरक्षा कवच के रूप में कार्य कर रही है।' मर्यादाओं की विभिन्न धाराओं का विश्लेषण करते हुए उन्होंने बताया कि वर्तमान में तेरापंथ धर्मसंघ के यशस्वी एकादशम अधिशास्ता

आचार्यश्री महाश्रमणजी की आज्ञा में 750 से अधिक साधु-साध्वियाँ साधना कर रहे हैं। आचार्य भिक्षु ने मर्यादाओं की स्थापना कर धर्मसंघ को सुदृढ़ किया, और जयाचार्य ने इसे एक ऐतिहासिक उत्सव के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। अनुशासन, समर्पण, श्रद्धा, व्यवस्था, आज्ञा व मर्यादा— इन सभी तत्वों का समावेश इस अभिनव उत्सव में देखा जा सकता है। इस अवसर पर साध्वी गुणप्रेक्षाजी ने सेवा, संस्कार व संगठन के साथ वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मर्यादा के महत्व पर प्रकाश डाला। साध्वी संवरविभाजी एवं साध्वी हेमंतप्रभाजी ने भी अपने प्रेरणादायी विचार रखे।

महिला मंडल की अनूठी सिंपोजियम प्रस्तुति, पुण्य एक्शन, स्वर संगान, ज्ञानशाला संघ सेनानी की लघु नाटिका, गीत आदि सरस व रोचक प्रस्तुतियों ने पूरी परिषद को भाव-विभोर कर दिया। कार्यक्रम में सभाध्यक्ष धीरज सेठिया, तेयुप अध्यक्ष उज्ज्वल जैन, महिला मंडल अध्यक्ष इंदु सेठिया, दानमल पारख व सरोज कोचर ने अपने विचार व्यक्त किए। लुधियाना की उपासिका बहनों एवं गायिका साधना प्रिया श्यामसुखा ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन राजेश बैद द्वारा प्रस्तुत किया गया।

मर्यादा महोत्सव : सेवा और समरसता का है संगम

टॉलीगंज।

मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के 161वें मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के भव्य शुभारंभ समारोह का आयोजन टॉलीगंज श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा दसाणी स्टूडियो में किया गया। इस अवसर पर 'मानवीय संबंधों की समरसता में सेवा की भूमिका' विषय पर जनसमुदाय को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा— 'मानवीय संबंधों की दुनिया में जीने वाले व्यक्ति के लिए समरसता का होना अत्यंत आवश्यक है। समरसता के अभाव में संबंध तो होते हैं, लेकिन उनमें स्नेह, सुख, आत्मीयता और प्रेम का अभाव रहता है। मानवीय संबंधों में समरसता बनाए रखने के लिए सेवा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। जहाँ संबंधों में सेवा की भावना जुड़ती है, वहाँ संबंध मजबूत और मधुर हो जाते हैं।'

उन्होंने आगे कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के

प्रणेता आचार्य भिक्षु ने सेवा पर विशेष बल दिया। सेवा के गुण की बंदोबत ही तेरापंथ आज भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है। सेवा एक वशीकरण मंत्र है, यह परम धर्म, आभ्यंतर तप, पूर्व जन्म की पुण्यार्थ और वर्तमान की जागरूकता का प्रतीक है। निरवद्य सेवा के माध्यम से कर्म निर्जरा होती है, समाधि प्राप्त होती है, और सम्मान एवं प्रतिष्ठा बढ़ती है।

मुनिश्री ने कहा कि सेवा निःस्वार्थ भाव से, बिना नाम और यश की कामना के, निर्मल भावों से करनी चाहिए। तेरापंथ धर्मसंघ में सेवा को अत्यधिक महत्व दिया गया है, और प्रत्येक व्यक्ति को सेवा के लिए सदैव प्रस्तुत रहना चाहिए। इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा— सेवा और परस्पर सहयोग परिवार एवं समाज को सशक्त बनाते हैं। सेवा की शुरुआत बाहर से नहीं, बल्कि घर से होनी चाहिए। जब सेवा ज्ञानयुक्त होती है, तो वह और अधिक

फलदायी बनती है। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। टॉलीगंज श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अशोक पारख ने स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर पार्षद मिताली बनर्जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

दसाणी स्टूडियो के मालिक अमिताभ दसाणी और उनके परिवार की महिलाओं ने गीत और वक्तव्य के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल, टॉलीगंज के मंगलाचरण से हुआ। सभा के मंत्री राजीव दुगड़ ने आभार व्यक्त किया। सभा द्वारा अतिथियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सभा, तेरापंथ युवक परिषद और तेरापंथ महिला मंडल का विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर बृहत्तर कोलकाता से बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

ज्ञानशालाओं में मर्यादा महोत्सव का आयोजन

हैदराबाद।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्वावधान में हैदराबाद में संचालित 20 ज्ञानशालाओं में मर्यादा महोत्सव के महत्व पर अत्यंत उत्साहपूर्वक कार्यक्रम आयोजित किए गए। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को प्रशिक्षिकाओं द्वारा मर्यादा महोत्सव के विषय में प्रशिक्षण दिया गया, जिसके माध्यम से मर्यादा महोत्सव के महत्व, इतिहास और प्रासंगिकता के बारे में बताया गया। प्रशिक्षण ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता के माध्यम से संपन्न हुआ। विजेता ज्ञानार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

इससे पूर्व बच्चों को मर्यादा महोत्सव की समझ विकसित करने के लिए एक वीडियो दिखाया गया, जिसे ज्ञानशाला की क्षेत्रीय संयोजिका संगीता गोलछा ने सरल भाषा में तैयार किया था। इस दौरान तेरापंथ धर्म संघ के नीति-नियमों और मौलिक मर्यादाओं की भी जानकारी दी गई।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।
— आचार्य श्री महाश्रमण

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की चतुर्थ पुण्यतिथि पर चारित्रात्माओं के उद्गार

शासनमाता बनी महान्

● साध्वी संवरविभा ●

विमल रवि की विमल चांदनी,
सबको लगती बड़ी सुहानी।
मलय-निलय की मस्त बहारें,
तब गौरव की गाथा गाएं।
शासनमाता बनी महान्, शासनमाना बनी महान्।।

सागर जिसके चरण पखारें,
उत्तुंग हिमगिरी तुम्हें निहारे।
निर्माणों का नीड़ संवारें,
दिव्य तेज बनकर तुम निखरे।
शासनमाता संघ की शान, शासनमाता बनी महान्।।

संकल्पों के दीप जलाकर,
प्रगति के नूतन द्वार खोलकर।
सपनों को सच कर दिखाकर,
पाई दिव्यदृष्टि संघ दिवाकर।
शासनमाता बनी महान्, शासनमाना बनी महान्।।

आशाओं के नव आस्थान,
करूं संघ उत्थान।
उम्मीदों के नव पायदान,
मेरा संघ महान।
शासनमाता का आह्वान - मेरा संघ महान्।।

चरणों शीश झुकाएँ

● साध्वी संयमलता ●

ममतामयी करुणामयी माँ के चरणों शीश झुकाएँ,
श्रद्धा सुमन चढ़ाए होऽऽऽ, सुमिरन दीप जलाएँ।।
उस रत्नकुक्षि धात्री मां छोटी घर जन्मी कन्या,
था वर्ण गेहुआं फिर भी मुखमण्डल छटा अनन्या।
जब आब अलौकिक बिखरी आलोकित था हर कोना,
थे चकित-2 सब परिजन पाकर वो रत्न अमोला,
बैद वंश की महाज्योति से होऽऽऽ रोशन दशों दिशाएँ।।
व्यक्तित्व निराला मैया वाणी का विषय न बनता,
इक बार चरण जो आता वो तेरा बनकर रहता।
कर्तृत्व ऋचाएँ तेरी वो गूँजे हर अधर-2 पर,
लेखन सम्पादन कौशल पर न्यौच्छावर विद्वदवर,
अति प्रभावी प्रवचन शैली होऽऽऽ दिल छूती रचनाएँ।।
मां तेरा स्नेहिल आंचल कितनों का था आश्वासन,
इक झटके में ही तोड़ा तुमने ममता का बन्धन।
सदियां नहीं भूल सकेगी उपकार अनंत तुम्हारे,
इक बार धरा पर आओ हम दिल से तुम्हें पुकारे,
क्या थी जल्दी क्या थी विवशता होऽऽऽ जो यों छोड़ सिधाएँ।।
तर्ज : धरती सुनहरी

श्रद्धा अर्घ्य चढ़ाएं

● साध्वी गुणप्रेक्षा ●

शासन मां की पुण्यतिथि पर श्रद्धा अर्घ्य चढ़ाएं।
तुलसी कलाकृति का गौरव युगों-युगों तक गाएं।।
पल-पल पलकों में नूर आपका वत्सलता का झरना,
अनुशासन के फूलों में भी करुणा की सौरभ भरना।
राह तुम्हारी चाह हमारी, अभिनव ऊर्जा पाए,
तुलसी कलाकृति का गौरव युगों-युगों तक गाएं।।
सदा समर्पण गुरुदृष्टि में विनम्रता की बनी नजीर,
सहज, सरलता और सौम्यता गुरु चरणों में रहती हाजिर।
जिस पर टिके दृष्टि तुम्हारी वह निहाल हो जाए,
तुलसी कलाकृति का गौरव युगों-युगों तक गाएं।।
शिक्षामृत का संदेश देकर ज्ञानामृत का पान कराते,
सृजनशीलता बेजोड़ तुम्हारी नव सृजन के स्वस्तिक रचते।
पौरुष की तव दीपशिखा से ज्योतिर्मय हम बन जाएं,
तुलसी कलाकृति का गौरव युगों-युगों तक गाएं।।
तीन आचार्यों की सेवा का अनुपम सौभाग्य लुभाया,
मातृहृदया प्रमुखा पद से संघ में नया रंग खिलाया।
समता साधक, श्रुत आराधक से आराधक पद पाएं,
शासन मां की पुण्यतिथि पर श्रद्धा अर्घ्य चढ़ाएं।।

अर्पित - श्रद्धासुमन

● साध्वी हेमंतप्रभा ●

अनुभव के खुले वातायन में
स्वल्प समय की स्वर्णिम स्मृतियां
स्मृति पटल पर तरोताजा हो रही हैं-
मन अपने भाग्य की सराहना कर रहा है।
हे सतिशेखरे ! शासनमाता -
एक कुसुम कली को फूल का आकार मिला
मन का सपना साकार हुआ
नौ महीने तक मां की हरी भरी गोद मिली
मां ने बच्चे का पालन पोषण किया, संवर्धन किया
और किया - सद्संस्कारों का वर्षण
अंगुली पकड़कर चलना सिखाया
संयम पथ पर बढ़ना सिखाया
उस ममतामयी मां ने मुझे स्नेहिल फ्रेम में सहेज लिया।
काश ! ढाई वर्ष का वह गोल्डन चांस सचमुच में -
मेरी लाइफ के लिए गॉड-गिफ्ट था
मैंने ससीम भावों से देखा असीम जीवन दर्शन
गगन के अनगिन तारों में देखा - चमकता ध्रुवतारा
भावनाओं के समंदर में देखा - अमूल्य मोती
लगता है - उन शुभ परमाणुओं का उतना ही संयोग था
बस, हर सांस समर्पित तव चरणों में
अर्पित - श्रद्धासुमन

एमबीडीडी ब्लड ऑन व्हील्स माह का समापन

विजयनगर।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप विजयनगर द्वारा आयोजित एमबीडीडी ब्लड डोनेशन एक मासिक कैम्प 'ब्लड ऑन व्हील्स' का समापन डिविनिटी अपार्टमेंट के क्लब हाउस में हुआ। इस अवसर पर रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक नवकार मंत्र के संगान से हुई। तेयुप विजयनगर के अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने सभी का स्वागत करते हुए समाज सेवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने कहा कि विजयनगर टीम अभातेयुप द्वारा निर्देशित सेवा, संस्कार और संगठन के तीनों आयामों में कार्यरत रहते हुए संघ सेवा के लिए सतत प्रयासरत है और आगे भी रहेगी। मेगा ब्लड

डोनेशन ड्राइव 'ब्लड ऑन व्हील्स' के अंतर्गत विभिन्न स्थानों पर लायंस ब्लड बैंक के सहयोग से रक्तदान शिविरों का आयोजन किया गया। जिसमें कुल 534 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। इस अभियान का शुभारंभ अहम भवन प्रांगण से अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में हुआ था। दक्षिण भारत एमबीडीडी प्रभारी अमित दक ने रक्तदान के क्षेत्र में विजयनगर की निरंतरता एवं सामाजिक भूमिका की सराहना की। सभा के उपाध्यक्ष भंवरलाल मांडोट ने अपने विचार व्यक्त करते हुए शुभकामनाएँ प्रेषित की। मासिक शिविरों में सहयोग देने हेतु लायंस ब्लड बैंक एवं मुख्य प्रायोजक बाबूलाल अशोक कुमार अमित दक परिवार

का सम्मान किया गया। डिविनिटी अपार्टमेंट ऑनर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष साई एवं उनकी पूरी टीम को भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर तेयुप विजयनगर के निवर्तमान अध्यक्ष राकेश पोखरणा, अभातेयुप परिवार, तेयुप विजयनगर के पदाधिकारी, परामर्शक सहित परिषद् सदस्य, संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी एवं युवा शक्ति की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अभियान में एमबीडीडी संयोजक विशाल दक एवं सह-संयोजक संजय बाफना, प्रदीप गांधी का विशेष श्रम रहा। रक्तदान शिविर के आयोजन में तेयुप विजयनगर परामर्शक दीपक भूरा का महत्वपूर्ण योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन मंत्री संजय भटेवरा ने किया।

भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान का हुआ आयोजन

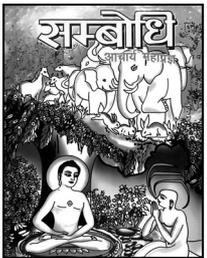
पार्श्वनाथ सिटी, जोधपुर।

'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने कहा कि इस स्तवन से हम संचित कर्मों का नाश कर सकते हैं, दुर्लभ

बोधि को सुलभता से प्राप्त कर सकते हैं और साथ ही साथ प्रमोद भावना की अभिव्यक्ति का सहजता से विकास कर सकते हैं जिससे गुण संक्रमण का सिद्धांत सहजतया सिद्ध हो जाता है। साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने कहा कि पुराने समय में चमत्कार को नमस्कार किया

जाता था। उस समय बेड़ियों में बंधे हुए आचार्य मानतुंग की दृढ़ श्रद्धा और भक्ति ने चमत्कार घटित किया। संपूर्ण श्रावक-श्राविका समाज ने निष्ठा के साथ एकाग्र चित्त होकर भक्तामर स्तोत्र के पाठ का रसास्वादन कर आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति की।

संबोधि



गृहिधर्मचर्या

प्रशस्त भावना से भावित पुरुष सद्गति को प्राप्त होता है। अप्रशस्त भावना से सद्गति विराधित होती है, दुर्गति प्राप्त हो जाती है।

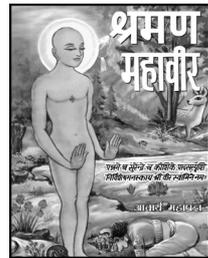
वर्तमान की नई चिंतन शैली ने इसे सिद्ध कर दिया है कि सुखी, शांत, प्रसन्न, स्वस्थ और चिंतनमुक्त व्यक्ति वही है जिसका चिंतन सदा सकारात्मक होता है। सकारात्मक सोच, चिंतन व भाव में न अपना अहित होता है और न दूसरों का। निषेधात्मक भाव स्व और पर दोनों के लिए अनिष्टकारक होते हैं, किन्तु वे पर के लिए इतने नहीं होते जितने अपने लिए होते हैं। मनुष्य स्वास्थ्य चाहता है, शांति चाहता है किन्तु वह पॉजिटिव चिंतन को महत्त्व नहीं देता।

पॉजिटिव सोच एक तपस्या है, एक साधना है और यह साधना ऐसी साधना है कि व्यक्ति इसकी द्वारा सब कुछ प्राप्त कर लेता है। यह कथन सर्वथा सत्य है, कि आप जैसा सोचते हैं वैसा ही बनते हैं। बुरा सोचना नरक है और अच्छा सोचना स्वर्ग है। इसके लिए एक ही अपेक्षा है कि व्यक्ति अपने मन में क्षुद्र विचारों, भावों को प्रवेश न करने दें, जैसे ही लगे कि दूषित भाव की तरंगें उठ रही हैं इन्हें वहीं रोक दे, उनका नियमन कर लें और उनके स्थान पर शुभ, पवित्र, मंगलमय और कल्याणकारी भावों को विराजित कर लें। ईर्ष्या, घृणा, क्रोध, बीमारी, अहंकार, दूसरों का अहित चिंतन, माया, दम्भ, भय, लालच आदि असंख्य नकारात्मक भाव हैं ये सब हमारे मन, मस्तिष्क और हृदय को संकीर्ण, दूषित व रुग्ण बनाते हैं। (क्रमशः)



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

श्रमण महावीर



तीर्थ और तीर्थकर

'परिस्थिति निमित्त कारण हो सकती है पर वह मूल कारण नहीं है। परिस्थिति की अनुकूलता में अंकुर फूटता है, पर वह अंकुर का मूल कारण नहीं है। उसका मूल कारण बीज है। विकास का तारतम्य परिस्थिति से प्रभावित होता है, पर उसका मूल कारण परिस्थिति नहीं है, किन्तु कर्म है।'

अग्निभूति की तार्किक क्षमता काम नहीं कर रही थी। भगवान् के प्रथम दर्शन में ही उनमें शिष्यत्व की भावना जाग उठी थी। शिष्यत्व और तर्क-दोनों एक साथ कैसे चल सकते हैं? वे लम्बी चर्चा के बिना ही सबुद्ध हो गए। वे आए थे इन्द्रभूति को वापस ले जाने के लिए, पर नियति ने उन्हें इन्द्रभूति का साथ देने को विवश कर दिया। वे अपने पांच सौ शिष्यों के साथ भगवान् की शरण में आ गए।

पावा की जनता कुछ नई घटना घटित होने की प्रतीक्षा में थी। उसने अग्निभूति की दीक्षा का संवाद बड़े आश्चर्य के साथ सुना। वह वायुभूति के कानों तक पहुंचा। वे चकित रह गए। उनमें संघर्ष की अपेक्षा जिज्ञासा का भाव अधिक था। उन्होंने सोचा-श्रमणनेता में ऐसी क्या विशेषता है, जिसने मेरे दोनों बड़े भाइयों को पराजित कर दिया। मैं जानता हूँ, मेरे भाई तर्कबल से पराजित होने वाले नहीं हैं। वे श्रमणनेता की आत्मानुभूति से पराजित हुए हैं। वायुभूति के मन में भगवान् को देखने की उत्कंठा प्रबल हो गई। वे अपने पांच सौ शिष्यों को साथ लेकर भगवान् के पास पहुंच गए।

भगवान् ने उन्हें संबोधित कर कहा, 'वायुभूति! तुम्हारी वह धारणा सशोधनीय है कि जो शरीर है वही जीव है। मैं साक्षात् देखता हूँ कि शरीर और जीव एक नहीं हैं। ये दोनों भिन्न हैं, एक अचेतन और दूसरा चेतन।'

'भंते! क्या इस विषय का साक्षात् किया जा सकता है?'

'निश्चित ही किया जा सकता है।'

'क्या यह मेरे लिए भी संभव है?'

'उन सबके लिए संभव है जो आत्मवादी हैं और आत्मा के शक्ति-स्रोतों को विकसित करना जानते हैं।'

वायुभूति के मन में एक प्रबल प्यास जाग गई। वे आत्म-साक्षात्कार करने के लिए अधीर हो उठे। उन्होंने उसी समय भगवान् से आत्मवाद की दीक्षा स्वीकार कर ली।

भगवान् का परिवार कुछ ही घंटों में बड़ा हो गया। वर्षों तक वे अकेले रहे। आज पन्द्रह सौ शिष्य उन्हें घेरे बैठे हैं और दरवाजा अभी बंद नहीं है।

यज्ञशाला में एक विचित्र स्थिति निर्मित हो गई। उसके आयोजक चिंता में डूब गए। यज्ञ की असफलता उनके चेहरे पर झलकने लगी। सर्वत्र उदासी का वातावरण छा गया। आयोजक वर्ग ने अन्य विद्वानों को श्रमणनेता के पास जाने से रोकने के प्रयत्न शुरू कर दिये।

पैसे के पास पैसा जाता है। धनात्मक शक्ति ऋणात्मक शक्ति को अपनी ओर खींच लेती है। महावीर ने शेष विद्वानों को इस प्रकार खींचा कि वे वहां जाने से रुक नहीं सके। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्य भारमल जी युग

साध्वीश्री कल्लूजी (रोयट) दीक्षा क्रमांक 74

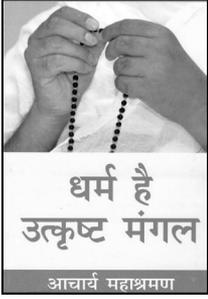
साध्वीश्री मुनि स्वरूपचंदजी, मुनि भीमजी और जयाचार्य की मां थी। साध्वीश्री गुणवती, चारित्र में विशेष सजग, प्रकृति से स्वस्थ, आकृति से सौम्य, कार्य में कुशल और तत्पर, गंभीर, विनयवती, वैराग्यवती व तपस्विनी थी।

साध्वीश्री ने प्रारम्भ से ही अपना जीवन तपस्या में लगा दिया। प्रथम चतुर्मास में आपने एक पंचोला, दूसरे में 8, तीसरे में 15, चौथे में 17, पांचवें में 20, छठे में मासखमण, सातवें में मासखमण, आठवें में 25 दिन, नौवें में मासखमण, दसवें में मासखमण, 11वें में मासखमण तप किया। बाद के पांच चातुर्मासों में आपने उपवास, बेले, तेले, चोले और पंचोले अनेक बार किये।

अन्त में आपने संलेखना तप प्रारम्भ किया। इसमें एक माह ऊनोदरी, फिर 15 दिन एकान्तर किये। फिर सात उपवास किये। उसके बाद तेले-2 तप चालू किया। लगभग 50 तेले किये। बीच में 8 बेले किये। यह सारी तपस्या-चौविहार की। भोजन में चार द्रव्य लेते। उसके बाद एक मासखमण, 11 व 8 दिन का तप किया। फिर एक तेला किया, उसमें थोड़ी आछ ली। उसके बाद तीन महीने एकान्तर फिर बहुत दिनों तक ऊनोदरी तप किया। एक प्रहर के सागारी अनशन में आपका स्वर्ग प्रस्थान हो गया।

- साभार: शासन समुद्र -

धर्म है उत्कृष्ट मंगल



-आचार्यश्री महाश्रमण

विशिष्ट धर्माराधना का पर्व : पयुषण



(पिछला शेष)

वहां से प्रस्थान करने पर साधु कुछ दूर तक उनका अनुगमन करते हैं। फिर जब वे दृष्टि से ओझल हो जाते हैं, साधु अपने स्थान पर लौट जाते हैं और इस बात से आनन्दित होते हैं कि इस भगवान (हमारे पूज्य आचार्य) ने सुखसेवनीय स्थविरकल्प को छोड़ दुष्कर अभ्युद्यत विहार को स्वीकार किया है। जिनकल्प को स्वीकार करने वाला यदि सामान्य साधु होता है तो वह खमतखामण कर लेता है और फिर वहां से प्रस्थान कर देता है।

विशिष्ट धर्माराधना का पर्व : पयुषण

संसार में दो ही तत्त्व हैं अथवा दो ही तत्त्वों का परिणमन संसार है। वे दो तत्त्व हैं चेतन और अचेतन। हमारा जीवन भी इन्हीं दो तत्त्वों का योग है। आत्मा चेतन तत्त्व है और शरीर अचेतन तत्त्व है, जड़ तत्त्व है। इन दोनों के मिलन का नाम ही जीवन है। इन दोनों के बिछुड़ने से जीवन अजीवन के रूप में परिणत हो जाता है। केवल आत्मा भी जीवन नहीं कहलाती और केवल शरीर भी जीवन नहीं कहलाता। मोक्ष में अनन्त मुक्त आत्माएं हैं, पर शरीर का योग न होने से वहां उनका कोई जीवन नहीं है। मृत्यु के पश्चात् मात्र शरीर को जीवन नहीं कहा जाता। जीवन का अर्थ है द्वंद, दो का सह अस्तित्व।

आदमी बन्द कमरे में अकेला बैठा हुआ स्वाध्याय आदि कर रहा है। वह अपने आपको अकेला अनुभव करता है। उसका अनुभव सही भी है परन्तु साथ में यह भी उतना ही सही है कि वह अकेला नहीं है, दो (शरीर और आत्मा) है। चेतन और शरीर की सहस्थिति होती है, किन्तु उनमें ऐक्य नहीं होता। उनका अस्तित्व अलग-अलग रहता है। ये दोनों अस्तित्व की दृष्टि से पार्थक्य रखते हुए भी परस्पर सापेक्ष रहते हैं। ज्योंही निरपेक्षता घटित होती है, जीवन-लीला समाप्त हो जाती है जीव और स्थूल शरीर के सहावस्थान की स्थिति जीवन है और इनका सर्वथा पृथक् होना मृत्यु है।

जीवन (शरीर और आत्मा का योग) के लिए पोषण की अपेक्षा रहती है। केवल आत्मा को पोषण नहीं चाहिए! केवल शरीर को भी पोषण नहीं चाहिए। न जीवमुक्त शरीर (शव) को भोजन की अपेक्षा होती है और न शरीरमुक्त जीव (मुक्त आत्मा, सिद्ध) को भोजन की अपेक्षा रहती है।

हमारे जीवन के दो पहलु हैं-भौतिक और आध्यात्मिक। उसके आधार पर पोषण (जीवन का पोषक तत्व) भी दो प्रकार का हो जाता है-भौतिक पोषण और आध्यात्मिक पोषण। इन दोनों प्रकार के पोषणों की सम्यक् पूर्ति स्वस्थ जीवन के लिए अपेक्षित है। आदमी रोटी, पानी आदि के द्वारा भौतिक पोषण प्राप्त करता है, शारीरिक बल प्रमुखतया अर्जित करता है। यह जीवन का एक पक्ष है। इस पक्ष का संबंध इस (वर्तमान जन्म के) जीवन तक सीमित है।

जीवन का दूसरा पक्ष है आध्यात्मिक। इसका संबंध मानसिक शांति, चित्त समाधि, सहज प्रसन्नता, परम आनन्द और आत्मशुद्धि के साथ है। यह पक्ष केवल वर्तमान जीवन तक ही सीमित नहीं है। इस जीवन की इतिश्री के बाद भी वह पक्ष अपना प्रभाव बनाए रखता है। भौतिक पक्ष जीवन का अनिवार्य अंग है, किन्तु अध्यात्म शून्य भौतिकता अशान्ति भी पैदा कर सकती है, इसलिए कम से कम दोनों में संतुलन तो स्थापित होना ही चाहिए।

आध्यात्मिक पक्ष को पोषण प्रदान करने के लिए उन उपज्रूमों की अपेक्षा रहती है जो हमारे कषाय (कोध, मान, माया, लोभ) को नियन्त्रित, उपशान्त व निर्जीर्ण करने वाले हों। उन विभिन्न उपज्रूमों को समझना और उनका प्रयोग करना अपेक्षित है। एक शब्द में उन उपज्रूमों को 'धर्म' संज्ञा दी जा सकती है।

जैन धर्म आत्मवादी धर्म है। आत्मा उसका केन्द्रीय तत्त्व है। जैन आचार और विचार की प्रायः सभी अवधारणाएं उसी की परिधि में अवस्थित हैं। जैन दर्शन में प्रत्येक आत्मा का स्वतन्त्र और त्रैकालिक अस्तित्व सम्मत है। वह सदा थी, सदा है और सदा रहेगी। वह अपने मूल स्वरूप में शुद्ध, अमूर्त, ज्योतिर्मय और निरामय है। वह अपने उत्तर अथवा आरोपित स्वरूप में अशुद्ध, मूर्त, अंधकारमय और सामय (सरोग) भी है। वह सुख-दुःख का अनुभव करती है। वह स्वयं उसकी विधाता है। वह नाना योनियों में परिसंचरण करती हुई कभी मनुष्य योनि में भी पहुंच जाती है। मनुष्य जन्म रूपी वृक्ष के छः फल बताए गए हैं-

जिनेन्द्रपूजा गुरुपर्युपास्तिः, सत्त्वानुकम्पा शुभपात्रदानम्।
गुणानुरागः श्रुतिरागमस्य, नृजन्मवृक्षस्य फलान्यमूनि॥

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र



तेरापंथ टाइम्स

की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड
स्कैन करें या आवेदन करें

<https://abtyp.org/prakashan>



समाचार प्रकाशन हेतु

abtyp@abtyp.org पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

मार्च 2025 सप्ताह के विशेष दिन	11 मार्च भगवान मल्लिनाथ निर्वाण, भगवान मुनिसुव्रत दीक्षा कल्याणक
13 मार्च होलिका	14 मार्च चातुर्मासिक पक्खी

जैन श्रेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री मधराजजी युग

मुनिश्री चौथमलजी (पुर) दीक्षा क्रमांक 300

मुनिश्री बड़े तपस्वी थे। उन्होंने बहुत तप किया पर तप की तालिका प्राप्त नहीं होती पर एक आछ के आधार पर छहमासी (187 दिन) तप का उल्लेख प्राप्त होता है।

- साभारः शासन समुद्र -

व्यक्तित्व निर्माण में रंगों का महत्व

● साध्वी कनकरेखा ●

बसंत ऋतु का आगमन रंगों की नई बहार लेकर आता है। प्रकृति भी इन्द्रधनुषी रंगों की सतरंगी जाजम बिछाकर ऋतुराज का स्वागत करती है। प्रकृति के परिवर्तनशील परिधान को देखकर सृष्टि का कण-कण नवीनता से सराबोर हो जाता है। रंग-बिरंगे फूलों की चादर ओढ़े प्रकृति इटलाती सी नजर आने लगती है। पक्षियों का कलरव, भंवरो की गुंजार मधुर संगीत की भांति कानों को सुहावना लगता है जिससे मन में नई उमंग एवं नई ऊर्जा का संचार होने लगता है। नए पत्तों एवं फूलों से लदे पेड़-पौधे भी अपने सुगंधमय वातावरण से आने वाले हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। प्रकृति की गोद में हर इंसान कभी दीवाली तो कभी होली की खुशियां लुटाता है। उत्सव की परम्परा में भारत में जितने भी उत्सव मनाये जाते हैं उसमें दीपावली की तरह होली को भी राष्ट्रीय पर्व रूप में माना गया है। दीपावली कृष्ण पक्ष की अमावस्या को आलोकमय बनाती है, तो होली शुक्ल पक्ष की शीतल चांदनी से जीवन को शीतल एवं सरस बनाती है।

विक्रम संवत् कैलेंडर के अनुसार फाल्गुनी पूर्णिमा, अन्तिम महीने का अन्तिम दिन है- होली। इस लोकप्रिय पर्व को समूचा विश्व बड़े ही आमोद-प्रमोद के साथ मनाता है। विशेष रूप से गेहूं, चने, होले आदि की फसल पककर जब किसानों के हाथ में आती है तब अपने श्रम बूंदों की सार्थकता पर किसान भी खुशियों में गुलाल उड़ते हैं एवं होलिका दहन करते हैं। यह लौकिक पर्व हमें आध्यात्मिक संदेश भी देता है कि हर इंसान अपने कषायों की होली जलाए, आपसी कटु व्यवहार का दहन करे, जिससे जीवन में खुशियों का सावन आए।

अंग्रेजी भाषा में होली का अर्थ है- पवित्रता। व्यक्ति अपने मनोविकारों को दूर कर शुभ-कर्मों के

द्वारा पवित्रता का विकास करे। मैत्री, प्रेम व सौहार्द के रंगों से सद्भावनापूर्ण होली खेले। समता की रंगोली से जीवन के उपवन को सजाएं, संवारे। यही आध्यात्मिक संदेश लेकर रंगों पर पावन पर्व आता है। व्यक्ति रंगों की दुनिया में जीता है और रंग व्यक्ति की भावधारा को प्रभावित करते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार हमारा सारा जीवन तंत्र रंगों के आधार पर चलता है। रंग व्यक्ति के मस्तिष्क एवं अवचेतन मन को सबसे अधिक प्रभावित करता है। समस्त प्राणियों के स्वास्थ्य और व्यवहार पर रंगों का विशेष प्रभाव पड़ता है। इसीलिए पश्चिमी जगत में 'कलर थेरेपी' का बहुत प्रचलन रहा है। शारीरिक व मानसिक रोगों की चिकित्सा में भी रंग का विशिष्ट स्थान है। रंग की कमी होने के कारण व्यक्ति शारीरिक, मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाता है। अनेक बीमारियां उत्पन्न हो जाती हैं। रंग की पूर्ति होते ही व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है। जैन दर्शन में लेश्या की चर्चा करते हुए बताया है कि जैसा हमारा भाव होता है वैसा ही रंग होता है और रंग के अनुरूप ही भाग्य बन जाता है। इसी के आधार पर कृष्ण, नील, कापोत, तेजस्, पद्म, शुक्ल लेश्याओं का निर्माण हुआ है। ये शुभ-अशुभ मनोभाव और रंग ही व्यक्तित्व विकास में निमित्त बनते हैं तो कहीं ह्रास के कारण भी बनते हैं। मन के अपवित्र आदि विचारों को प्रशस्त लेश्या व रंगों के स्थान से पवित्र बनाया जा सकता है। लेश्या का भावों के साथ गहरा संबंध है।

जैसा रंग वैसा भाव - रंगों का महत्व अनादिकाल से ही है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षाध्यान के माध्यम से भाव परिवर्तन के अनेक प्रयोग बताये हैं और साथ ही रंग चिकित्सा के प्रयोग भी करवाए हैं। हम जिस रंग के कमरे में रहते हैं उसका भी हमारे विचारों पर प्रभाव पड़ता है। विचार हमारे मन को प्रभावित करते हैं। मन का सीधा असर शरीर पर होता है। रंग पॉजेटिव और

नेगेटिव दोनों तरह का प्रभाव डालते हैं।

रंगों का प्रभाव और उनका महत्व

लाल रंग— सक्रियता और स्फूर्ति का प्रतीक है। यह रंग जीवनी शक्ति, साहस और आत्मविश्वास को बढ़ाने वाला है। हल्का लाल रंग अध्यात्म का रंग है, जिससे आध्यात्मिक चेतना का जागरण होता है। दर्शन केन्द्र पर अरुण रंग का ध्यान किया जाता है, ध्यान-साधना की गहराई में साधक तीसरे नेत्र को खोलकर ज्ञान-सरिता में अभिस्नात हो जाता है।

पीला रंग— प्रसन्नता का प्रतीक है। ज्ञानतंतु एवं मन पर पीले रंग का विशेष प्रभाव पड़ता है। जिनका बुद्धिबल कमजोर है या जिनके मस्तिष्कीय स्नायु दुर्बल हैं, उन्हें सक्रिय करने के लिए तथा बुद्धि को तीव्र बनाने के लिए पीले रंग का ध्यान किया जाता है। यह रंग वैचारिक उलझनों को दूर कर संतुलित जीवन जीना सिखाता है। पीला रंग बौद्धिक विकास एवं भावना शुद्धि का प्रतीक है। इस रंग से निकलने वाली ऊर्जा हमारे अन्तर्मन को प्राणवान एवं प्रसन्न बनाती है। पीले रंग के परमाणु से व्यक्ति अल्प कषायी एवं अल्पभाषी होता है।

हरा रंग— शीतलता का प्रतीक है। हरे रंग में रोग-प्रतिरोधक शक्ति की अपूर्व क्षमता है। यह कीटाणुओं को नष्ट करने का शक्तिशाली साधन है। लीवर एवं गुदों के विकारों को दूर करने के लिए हरे रंग की ऊर्जा सहायक होती है। यह तन-मन को शीतल बनाता है।

नीला रंग— पवित्र विचारों का प्रतीक है। यह मन में पवित्र विचार उत्पन्न करता है और सकारात्मक सोच को बढ़ाता है। यह मस्तिष्क को शांति देने वाला रंग है और नाड़ी संस्थान को राहत पहुंचाता है। हमारे शारीरिक सौंदर्य एवं रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करता है। इससे जीवन शक्तिशाली बनता है। भय और चिंता से मुक्त होने के लिए नीला रंग लाभप्रद है।

श्वेत रंग— समता का प्रतीक है। श्वेत रंग की प्रधानता से व्यक्ति का चित्त शांत-प्रशांत रहता है। आत्मसंयम, समता एवं उपशम भाव की साधना के लिए सफेद रंग महत्वपूर्ण माना गया है। इससे क्रोध और अहंकार का शमन होता है। सफेद रंग की मात्रा बढ़ने से नई ताजगी, नई उमंग, नया उत्साह बढ़ता है। व्यक्ति की भावधारा सात्विक बनती है, प्रामाणिकता, नैतिकता आदि श्रेष्ठ गुणों के साथ व्यक्तित्व का सुन्दर निर्माण होता है।

काला रंग— जिसमें काले रंग की प्रधानता होती है, उस व्यक्ति का दृष्टिकोण विशेष रूप से नकारात्मक होता है। उसके भीतर आकांक्षा अधिक होती है, उसका व्यवहार आकर्षक नहीं होता, और उसके आभामंडल का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उसमें ईर्ष्या, परिग्रह और प्रमाद विशेष रूप से दिखाई देते हैं। हमारे शरीर में जितनी भी ग्रंथियां (ग्लैंड्स) हैं, उनका अपना रंग होता है। जितने भी चैतन्य केन्द्र हैं, उनका भी अपना-अपना रंग है। इसी के आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का अंकन किया जाता है।

होली का पौराणिक संदर्भ

होली मनाने के पीछे पौराणिक घटनाओं का उल्लेख मिलता है। राजा हिरण्यकश्यप अन्यायी एवं नास्तिक था। उसका पुत्र प्रह्लाद आस्तिक एवं ईश्वरीय गुणों से युक्त था। विष्णु भक्त प्रह्लाद को पिता हिरण्यकश्यप बार-बार विष्णु-भक्ति करने से रोकता था। जब वह नहीं रुका, तो उसे मारने के लिए अनेक प्रयत्न किए गए, जो विफल हो गए। तब हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका से सहायता मांगी। होलिका को आग में न जलने का वरदान प्राप्त था, पर होलिका का यह वरदान उस समय समाप्त हो गया था। इस बात से अनभिज्ञ होलिका, प्रह्लाद को लेकर चिता में जा बैठी। परंतु विष्णु-कृपा से प्रह्लाद सुरक्षित रहा और होलिका जलकर भस्म हो गई। तब से प्रतिवर्ष फाल्गुन पूर्णिमा को होलिका दहन की प्रथा चली आ रही है।

कषाय उपशमन की साधना है प्रेक्षाध्यान

टॉलीगंज ।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षा फाऊन्डेशन के निर्देशन में व तेरापंथ सभा द्वारा डायमण्ड सिटी साउथ में त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का भव्य आयोजन हुआ। जिसमें 45 से अधिक संभागियों ने उत्साह व निष्ठा के साथ भाग लिया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा धर्म उत्कृष्ट मंगल है, शोधन व मुक्ति का पथ है। अहिंसा, संयम और तप धर्म के लक्षण है।

धर्म के दो भेद हैं- संवर और निर्जरा। निर्जरा का एक भेद ध्यान है। ध्यान निवृत्ति व जागरूकता की साधना है। ध्यान में भावक्रिया, प्रतिक्रिया विरति, मैत्री, मिताहार

व मितभाषण का विशेष महत्त्व है। प्रेक्षाध्यान कषाय उपशमन, विषय वमन की साधना है। कायोत्सर्ग से व्यक्ति की कर्मजा शक्ति बढ़ती है, श्वास प्रेक्षा से एकाग्रता व स्मरणशक्ति का विकास होता है और ज्ञाता द्रष्टाभाव का विकास होता है। निरन्तर ध्यान की साधना से अपूर्व आनंद और शांति का अनुभव होता है।

मुनिश्री ने सभी संभागियों के प्रति आध्यात्मिक मंगला कामना व्यक्त करते हुए प्रेरणा दी कि सभी निरन्तर ध्यान का अभ्यास करते रहें। मुनिश्री ने ध्यान के प्रयोग कराए। इस अवसर पर संभागियों ने अपने अनुभव सुनाए। अंजु कोठारी व नीता जैन ने प्रशिक्षण दिया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक पारख, हनुमानमल छाजेड़, योगा टीचर कुलवंत सिंह, रिकु सिंह, मीनाक्षी छाजेड़ ने विचार रखे।

डगमगाती नौका को पार लगाने वाली पतवार है मर्यादा

मैसूर।

साध्वी पावनप्रभाजी के सान्निध्य में मैसूर के तेरापंथ सभा भवन में 161 वॉ मर्यादा महोत्सव बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ से पूर्व आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर से सभा भवन तक रैली निकाली गई। कार्यक्रम में मैसूर एवं लगभग 13 क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का मंगलाचरण तेरापंथ कन्या मंडल, मैसूर द्वारा भिक्षु अष्टकम् के साथ किया गया। सभाध्यक्ष प्रकाश दक रॉयल द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर साध्वी पावनप्रभाजी ने कहा - मर्यादा वह मशाल है जो जीवन को जगमगा देती है, मर्यादा वह पतवार है जो डगमगाती नौका को पार लगा देती है। मर्यादा दुर्गुणों के

लिए स्पीड ब्रेकर है तो सद्गुणों के लिए वनवे है। जहां मर्यादा है वहाँ विकास और विश्वास है। किसी भी धर्म संघ का आधार संख्या नहीं, सुदृढ़ आचार व मर्यादा है। आचार्य भिक्षु ने अपने धर्म संघ में क्वांटिटी को नहीं, क्वालिटी को महत्व दिया। इसीलिए दीक्षा देते समय दीक्षार्थी को वैराग्य की कसौटी पर कसा। आचार्य भिक्षु ने आज्ञा, अनुशासन, मर्यादा, संगठन व्यवस्था का सूत्रपात कर संघ को महान बना दिया। साध्वी आत्मयशाजी और साध्वी उन्नतयशा जी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति वक्तव्य के माध्यम से दी। मैसूर महिला मंडल, तेयुप, टीपीएफ एवं पेरियापटना, चित्रदुर्गा, हिरीयूर, मंड्या आदि क्षेत्रों से पधारे पदाधिकारीगण ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। बच्चों ने आचार्य श्री भिक्षु एवं उनकी मर्यादा पर आधारित प्रस्तुति दी। संचालन साध्वी रम्यप्रभा जी ने किया।

संक्षिप्त खबर

‘प्रेक्षा प्रवाह : शक्ति एवं शांति की ओर’ कार्यशाला का आयोजन

मदुरै। अभातेममं निर्देश अनुसार तेममं मदुरै द्वारा प्रेक्षा ध्यान के तीसरे चरण में मंत्र प्रेक्षा (ध्यान एक शक्तिशाली प्रयोग) कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ मंडल की बहनों द्वारा सीमंधर स्तुति व प्रेक्षाध्यान गीत से की गई। मुख्य वक्ता मधु जीरावला ने मंत्र प्रेक्षा का अर्थ समझाते हुए कहा कि विशिष्ट अक्षरों के संयोजन का नाम मंत्र है। मंत्र और साधक के सूक्ष्म शरीर जब तक एकरूप नहीं हो जाते तब तक ना साधक सफल होते हैं और ना मंत्र। उन्होंने पांच चैतन्य केंद्र एवं उनसे सम्बंधित मंत्रों के बारे में बताया और नवकार मंत्र का ध्यान करवाया। आभार ज्ञापन सोना चोपड़ा ने किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री सुनीता कोठारी ने किया।

परीक्षा के समय कैसे करें बेहतर परेडिंग ?

दिल्ली। परीक्षा के समय में बच्चों के साथ ही माता-पिता भी तनाव ले लेते हैं। ऐसे में इस तनाव से दूरी बनाने के उपायों पर चर्चा के लिए आयोजित गोष्ठी में टीपीएफ दिल्ली की अध्यक्ष कविता बरडिया ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता लाइफ कोच और काउंसलर रितु जैन ने परेडिंग को एजाम टाइम में तनाव मुक्त रहने के उपाय बताते हुए प्रयोग भी करवाए। उन्होंने तनाव कम करने के लिए आइस क्यूब हैक, 60 सेकेंड रिसेट, फन ब्रीथिंग एक्सरसाइज और ग्रेटिट्यूट जार के बारे में बताया। सत्र के अंत में जिज्ञासा-समाधान का क्रम भी रखा गया। टीपीएफ दिल्ली की ज्वाइंट सेक्रेटरी और फेमिना कन्वेंनर स्वाति जैन ने कार्यक्रम का संयोजकीय दायित्व संभाला। कार्यक्रम में टीपीएफ के नेशनल वाइस प्रेजिडेंट विजय नाहटा, नेशनल फेमिना विंग कन्वेंनर रश्मि जैन, नेशनल फेमिना विंग को-कन्वेंनर गरिमा बोथरा, टीपीएफ नॉर्थ जोन अध्यक्ष राजेश जैन, टीपीएफ नॉर्थ जोन सेक्रेटरी राहुल बोथरा, दिल्ली सभा से ललित लुणिया और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। सह मंत्री प्रीति दुगड़ ने आभार ज्ञापन किया।

वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

गुवाहाटी। अभातेममं द्वारा निर्देशित राष्ट्र स्तरीय वाद विवाद प्रतियोगिता (विषय - आधुनिक जीवन शैली एवं पारिवारिक संस्कार - सह अस्तित्व या संघर्ष) का आयोजन स्थानीय स्तर पर तेरापंथ महिला मंडल, गुवाहाटी द्वारा तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र एवं प्रेरणा गीत से हुई। अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा ने सभी का स्वागत करते हुए कार्यशाला पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य सुचित्रा छाजेड़ ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। संयोजिका शशि सुराणा ने प्रतियोगिता के नियमों की जानकारी दी। निर्णायक के रूप में पूर्व अध्यक्ष रंजू खटेड़ एवं नलिनी सेठिया ने अपनी अहम भूमिका निभाई। प्रतियोगिता के सभी प्रतिभागियों व विजेताओं का मंडल द्वारा सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन मंत्री ममता दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन मंजू मेहता ने किया।

आत्मकल्याण का मार्ग है संथारा

गंगाशहर। उग्रविहारी तपोमुर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में कमलादेवी भूरा की स्मृति सभा का आयोजन किया गया। मुनिश्री ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि गंगाशहर में मात्र 20 दिनों में कई संथारे हो गए। कमलादेवी का संथारा भले ही अल्पकालिक रहा, लेकिन अत्यंत प्रभावशाली था। स्व. साध्वी इलाकुमारी जी की भाभी एवं मांगीलाल जी भूरा की पत्नी ने जीवनभर सेवा, सामायिक, प्रवचन और पात्रदान का लाभ लिया। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम समय में संथारा करके आत्मकल्याण के साथ परिवार व धर्मसंघ की गरिमा को बढ़ाया। कार्यक्रम में मुनि सुमतिकुमार जी, मुनि श्रेयांसकुमार जी और मुनि विमलविहारी जी ने अपने वक्तव्यों के माध्यम से उनके अनेक गुणों को स्मरण करते हुए उनके उत्तरोत्तर विकास की मंगलकामना की। कार्यक्रम में सभा के मंत्री जतन संचेती, डॉ. केदारनाथ, डॉ. रश्मि पुगलिया, मालचंद भूरा, मोहन भूरा और संगीता डागा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के अंत में एक लोगसस का सामूहिक ध्यान कर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

मंगल भावना समारोह का आयोजन

लाडनूं।

‘शासन गौरव’ साध्वी कल्पलता जी के सान्निध्य में सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी प्रमिलाकुमारी जी एवं सहवर्ती साध्वीवृंद का मंगल भावना समारोह ऋषभ द्वार में आयोजित हुआ। नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। जैन विश्व भारती के संयुक्त मंत्री रमेश खटेड़, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा वरिष्ठ

उपाध्यक्ष राजेंद्र खटेड़, उपासिका डॉ. सुशीला बाफना, तेरापंथ युवक परिषद मंत्री राजेश बोहरा, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष शोभन कोठारी, अणुव्रत समिति लाडनूं संरक्षक शांतिलाल बैद, मुमुक्षु बहनें एवं संगीता भंसाली ने अपने भावों की प्रस्तुति दी।

साध्वी कंचनरेखा जी एवं समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी वृंद ने सामूहिक गीतिका का संगान किया। निवर्तमान सेवा केंद्र व्यवस्थापिका

साध्वी प्रमिलाकुमारी जी ने ‘शासन गौरव’ साध्वी कल्पलता जी को चाकरी का दायित्व प्रदान किया। समारोह में संयोजन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल की कार्यसमिति सदस्य सुनीता बैद ने किया। जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष धर्मचंद लुंकड़ की गरिमामय उपस्थिति रही।

सभी सभा संस्था के पदाधिकारी गण, कार्यसमिति सदस्य, अन्य सदस्य, जैन विश्व भारती परिवार, श्रावक-श्राविका समाज मौजूद रहा।

टीपीएफ का मेगा मेडिकल कैंप का आयोजन

दिल्ली।

टीपीएफ दिल्ली की ओर से अणुव्रत भवन में निःशुल्क मेगा मेडिकल कैंप का आयोजन किया गया।

इस मेगा मेडिकल कैंप में लगभग 100 से ज्यादा लोगों ने अपनी जांच करवाई। इस मेडिकल कैंप में बीएलके-मैक्स हॉस्पिटल के द्वारा डॉक्टरों की टीम का सहयोग प्राप्त हुआ।

कैंप में ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर, बोन मिनेरल डेनसिटी (बीएमडी), ईसीजी, पीएसए टेस्ट (पुरुषों के लिए), पैप

स्मीयर (महिलाओं के लिए) आदि जांच की गई।

इस दौरान बीएलके-मैक्स की ओर से कार्डियोलॉजिस्ट, फिजिशियन, ऑर्थोपेडिक, कैसर, यूरोलोजिस्ट, फिजियोथेरेपी, डायटिशियन आदि डॉक्टर की टीम मौजूद थी। साथ ही कैसर अवेरनेस पर एक टॉक शो का भी आयोजन किया गया।

शार्प साइट आई हॉस्पिटल की तरफ से नेत्र जांच, क्लोव डेंटल की तरफ से डेंटल चेकअप एवं आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के द्वारा

ब्लड चेकिंग की सुविधा दी गई। इस मेडिकल कैंप में टीपीएफ गौरव संपत नाहटा, टीपीएफ की राष्ट्रीय फेमिना को-कन्वेंनर गरिमा बोथरा, टीपीएफ नॉर्थ जोन सेक्रेटरी राहुल बोथरा, जेएसटी दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया जी, तेयुप दिल्ली अध्यक्ष राकेश बंगानी की गरिमामय उपस्थिति रही।

इस मेडिकल कैंप के लिए मन्नालाल बैद, विशाल दुगड़ और अंकुश पुगलिया का आर्थिक योगदान रहा। कार्यक्रम के कन्वेंनर जैनेंद्र जैन और को-कन्वेंनर गौतम डुंगरवाल थे।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

धुबड़ी।

मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी के सान्निध्य एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, धुबड़ी द्वारा 'व्यक्तित्व विकास कार्यशाला - Happy & Healthy Life' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई। तेयुप धुबड़ी के साथियों ने विजय

गीत का संगान किया। तेयुप अध्यक्ष बजरंग कुंडलिया ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सभी संभागियों का स्वागत किया।

मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी ने विभिन्न विषयों के माध्यम से परिवार को सुखी बनाने के उपाय बताए। उन्होंने कहा कि जो परिवार सुखी होते हैं, वे स्वाभाविक रूप से समृद्ध हो जाते हैं। साथ ही, उन्होंने स्वयं को स्वस्थ रखने

पर भी विशेष जोर दिया।

मुनिश्री ने संभागियों की जिज्ञासाओं का सुंदर ढंग से समाधान किया। मुनि पदमकुमार जी ने कार्यशाला में उपस्थित संभागियों को परिवार में सुखी रहने की महत्ता पर जोर देते हुए मार्गदर्शन दिया। कार्यशाला के अंत में तेयुप उपाध्यक्ष अंकित मालू ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इस कार्यशाला में कुल 96 संभागियों ने भाग लिया।

परीक्षा प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम का आयोजन

इस्लामपुर।

मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' ठाणा -2 के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् एवं समण संस्कृति संकाय के तत्वावधान में आयोजित सम्यक दर्शन कार्यशाला की परीक्षा के प्रमाण पत्र वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। विगत अगस्त माह में आयोजित इस परीक्षा में इस्लामपुर क्षेत्र के परीक्षार्थियों

ने भी भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री द्वारा महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। तत्पश्चात तेयुप टीम ने विजय गीत से मंगलाचरण किया। तेयुप अध्यक्ष राकेश धाड़ेवा ने भविष्य में जागरूक होकर इस कार्यशाला में अधिक से अधिक संख्या में जुड़ने हेतु आह्वान किया। तेयुप मंत्री मुदित पीचा ने कार्यशाला की जानकारी दी। इस मौके पर मुनि आनंद कुमार जी कालू ने अपने वक्तव्य में कहा कि सम्यक

दर्शन के आधारभूत तत्व तीन हैं - देव, गुरु, धर्म। सम्यक दर्शन के मूल तीन लाभ हैं - सम्यक दृष्टिकोण का विकास, विधायक दृष्टिकोण का विकास तथा तीव्रतम, क्रोध, मान, माया और लोभ का उपशमन। तेरापंथ सभा, तेममं, तेयुप, अणुव्रत समिति और ज्ञानशाला परिवार सहित काफी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे। परिषद् द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गए।

संक्षिप्त खबर

शवासप्रेक्षा से व्यक्ति रह सकता है स्वस्थ

नोखा। तेरापंथ धर्म संघ में इस वर्ष प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष मनाया जा रहा है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने अपनी दूरदर्शिता से इसकी खोजकर एक नए तरीके से प्रस्तुत किया। 'शासनगौरव' साध्वी राजीमतीजी ने नोखा तेरापंथ भवन में 'प्रेक्षाध्यान प्रवचन माला' के दौरान कहा कि जब भी समय मिले, शवास प्रेक्षा का अभ्यास करना चाहिए। उन्होंने समझाया कि 'शवास आ रहा है, शवास जा रहा है' - इस प्रक्रिया को शांत चित्त और स्थिर योग से देखना अत्यंत लाभकारी है। यह अनेक बीमारियों को ठीक करने में सहायक है, क्योंकि सम्पूर्ण जीवन शवास पर ही आधारित है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में सही ढंग से शवास लेना सीखना अत्यंत आवश्यक है। प्रवचन माला के प्रारंभ में तीर्थंकर स्तुति के साथ साध्वी कुसुमप्रभाजी ने प्रमाद और आलस्य को त्यागकर जीवन में धर्म अपनाते पर बल दिया।

तेरापंथ सभा द्वारा ध्वजारोहण का कार्यक्रम

हैदराबाद। 76वें गणतंत्र दिवस पर तेरापंथ सभा द्वारा ध्वजारोहण का कार्यक्रम डॉ. राजेन्द्र शिक्षा निकेतन विद्यालय, उत्तरपाडा में आयोजित हुआ। सर्वप्रथम उत्तरपाडा सभा के सलाहकार मदनलाल डोसी द्वारा ध्वज फहराया गया। नमस्कार महामंत्र एवं राष्ट्रगान का सामूहिक संगान किया गया। सभाध्यक्ष निकेश सेठिया ने गणतंत्र दिवस की शुभकामना देते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

सभा द्वारा विद्यालय को 500 लीटर पानी की टंकी प्रदान की गयी। कार्यक्रम के दूसरे चरण में ज्ञानशाला के विद्यार्थियों और विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा गणतंत्र दिवस समारोह पर सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को सभा के गणमान्य सदस्यों द्वारा सम्मानित किया गया।

निःशुल्क मधुमेह एवं रक्त चाप शिविर

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर के तत्वावधान में आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम के अंतर्गत निःशुल्क मधुमेह एवं रक्तचाप परीक्षण शिविर का समायोजन मारियापनपल्या स्थित, गायत्री पार्क में आयोजित किया गया। शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से किया गया। सभी सदस्यों का रैंडम ब्लड शुगर लेवल ग्लूकोमीटर के माध्यम से एवं रक्त चाप परीक्षण किया गया। इस शिविर से कुल 73 लोग लाभान्वित हुए। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरडिया, राजेश देरासरिया, जयंतिलाल गाँधी एवं विनोद कोठारी ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

सामाजिक सेवा कार्य

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा आश्रया सेवा ट्रस्ट और आर्य सेवाश्रम ट्रस्ट में मांगीलाल बोहरा एवं परिवार के सहयोग से सेवा कार्य संपादित किया गया। आश्रया सेवा ट्रस्ट में प्रवासित 29 वृद्ध महिलाओं को दैनिक जरूरत की राशन सामग्री प्रदान की गई। आर्य सेवाश्रम ट्रस्ट में 57 बच्चों को खाद्य सामग्री वितरित की गयी। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरडिया ने बोहरा परिवार के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया। इस अवसर पर तेयुप से राजेश देरासरिया, विनोद कोठारी की उपस्थिति रही।

- ❖ जहां तक संभव हो सके, परावलंबी बनने से बचें
- ❖ जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।

— आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कार निर्माण के लिए बच्चों को ज्ञानशाला भेजना है आवश्यक

सूरतगढ़।

साध्वी प्रज्ञावतीजी और साध्वी सुदर्शनाश्री जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा तेरापंथ भवन, सूरतगढ़ में ज्ञानशाला के बच्चों के लिए फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचरण से हुई।

साध्वी सुदर्शनाश्री जी ने ज्ञानशाला की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जैसे सोना खदान से निकलने के बाद तपकर ही शुद्ध सोने का रूप लेता है, उसी प्रकार बच्चों में भी संस्कारों का विकास ज्ञानशाला के माध्यम से होता है। साध्वी प्रज्ञावती जी ने ज्ञानशाला के महत्व को समझाते हुए

कहा कि जिस प्रकार अभिभावक बच्चों के बौद्धिक और शारीरिक विकास के लिए विभिन्न कक्षाओं में भेजते हैं, उसी प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान और संस्कार निर्माण के लिए भी उन्हें ज्ञानशाला में भेजना आवश्यक है।

ज्ञानशाला की संयोजिका महक रांका ने बताया कि सत्र 2023-24 और 2024-25 की परीक्षा में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले तथा परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

मुख्य प्रशिक्षिका सारिका रांका ने कुछ दिन पूर्व आयोजित ज्ञानकुंज चित्रकला प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा की। फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा निर्णायक

मंडल की नेहा बैद और प्रज्ञा नौलखा ने की। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार वितरण का संचालन मुख्य व्यवस्थापिका नीतू बैद ने किया, जबकि मंच संचालन कन्या मंडल की स्नेहा चौरडिया ने किया।

कार्यक्रम के दौरान, मर्यादा महोत्सव में भाग लेने वाली तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल और ज्ञानशाला के बच्चों का भी तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सम्मान किया गया।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ कन्या मंडल और तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सदस्य उपस्थित रहे।

केंद्रीय बजट के विश्लेषण पर कार्यक्रम

दिल्ली।

टीपीएफ दिल्ली द्वारा केंद्रीय बजट के विश्लेषण पर आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्ष कविता बरडिया ने सभी का स्वागत किया और बताया कि बजट पूरे देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. रवि गुप्ता ने बजट से जुड़े अहम पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने आयकर पर गहराई से प्रकाश डाला और केंद्रीय बजट में किए गए नए बदलावों की विस्तृत जानकारी दी। साथ ही, उन्होंने सरकार द्वारा

प्रस्तावित नए प्रावधानों, एनपीएस, टैक्स, टीडीएस, टीसीएस आदि विषयों पर भी चर्चा की।

सीए मोहित गोलछा ने जीएसटी के प्रावधानों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने टैक्स, क्रेडिट नोट, वाउचर ट्रांजैक्शन आदि विषयों की भी गहन जानकारी प्रदान की।

इसी क्रम में सीए अशोक कुमार जैन ने डायरेक्ट और इनडायरेक्ट टैक्स पर चर्चा की।

साथ ही, आयकर, कैपिटल गेन के प्रावधानों, टीडीएस और टीसीएस पर भी जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित किया

गया, जिसमें प्रतिभागियों ने बजट से संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्न पूछे, जिनका उत्तर उपस्थित वक्ताओं द्वारा दिया गया।

कार्यक्रम की संयोजक एडवोकेट रीमा जैन और सह-संयोजक सीए मोहित चौधरी जैन के साथ इस आयोजन में टीपीएफ नेशनल वाइस प्रेसिडेंट विजय नाहटा, नेशनल ज्वान्ट सेक्रेटरी मोहित बैद, टीपीएफ गौरव संपत नाहटा, एनईसी सदस्य और टीपीएफ दिल्ली के सलाहकार, पदाधिकारी एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

आध्यात्मिक मिलन समारोह आयोजित

मंड्या।

साध्वी पावनप्रभाजी ठाणा 4 एवं साध्वी सिद्धप्रभाजी ठाणा 4 के मिलन के दौरान तेरापंथ धर्मसंघ के सौहार्द, समन्वय और सामंजस्य का अद्भुत नजारा देखने को मिला। मार्ग में मिलन के दौरान दोनों वर्गों ने भावपूर्ण गीतिका का संगान किया। तत्पश्चात् भव्य रैली के साथ साध्वीवृंद का मंड्या तेरापंथ भवन में पदार्पण हुआ। मंगलाचरण कन्या मंडल द्वारा तथा स्वागत वक्तव्य अध्यक्ष सुरेश भंसाली द्वारा हुआ।

तत्पश्चात दोनों वर्गों ने सुमधुर गीतिका का संगान किया, तथा सभी साध्वीवृंद के प्रति प्रमोदभावना व्यक्त की। साध्वी पावनप्रभाजी ने कहा कि आज का यह उत्साह, खिलते हुए फूल, मुस्कुराते हुए चेहरे प्रसन्नता की अनुभूति करा रहे हैं। मंड्या भवन के इस प्रांगण में भैक्षवशासन के समंदर की दो नदियों का संगम हो रहा है। साध्वी सिद्धप्रभाजी और हमें कई वर्षों में साथ रहने का अवसर मिला है। साध्वी सिद्धप्रभाजी से हमारा मिलन दूध और मिश्री का मिलन है, विनय और वात्सल्य

का मिलन है। साध्वी आत्मयशाजी, साध्वी आस्थाप्रभाजी, साध्वी मलययशाजी, साध्वी रम्यप्रभाजी साध्वी दीक्षाप्रभाजी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी उन्नतयशाजी ने किया। कार्यक्रम में ज्ञानशाला, युवक परिषद, महिला मंडल, सभा ने अपनी अच्छी उपस्थिति दर्ज कराई व बैंगलोर विजयनगर, आर.आर. नगर, मैसूर, HD कोटे, आदि क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाओं की भी उपस्थिति रही। आभार ज्ञान सभा के मंत्री विनोद भंसाली ने किया।

ज्ञानार्थियों के लिए क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

गोरेगांव (मुंबई)।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों के लिए ब्रेन ब्रज क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सभी प्रशिक्षिका बहनों द्वारा सामूहिक मंगलाचरण से हुई।

मुंबई आंचलिक संयोजिका राजश्री कच्छरा एवं सह संयोजिका अंजू चौधरी, चंचल परमार और विनीता जैन की विशेष उपस्थिति में प्रतियोगिता का शुभारंभ हुआ।

अल्का आच्छा एवं शीतल सिंघवी ने गेम की डोर संभाली, जबकि जॉन संयोजिका भावना सांखला ने पधारें हुए सभी पदाधिकारियों का स्वागत

एवं अभिनंदन किया और अपने भावों की सुंदर अभिव्यक्ति दी। हर्षा जैन ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। सभी समूहों के बच्चों ने बड़े उत्साह के साथ प्रतियोगिता में भाग लिया।

मुख्य प्रशिक्षिका रेखा सिंघवी, स्वीटी धींग, मंजू सिंघवी, नीलम कोठारी और कल्पना चौरडिया का विशेष सहयोग रहा। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए गए, साथ ही सभी प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन सीमा सिंघवी एवं रूपल मेहता ने किया, जबकि आभार ज्ञापन सुनीता दक ने किया।

ज्ञानशाला परीक्षार्थियों का सम्मान

हैदराबाद।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा सिकंदराबाद के तत्वावधान में नगरत्रय में 21 ज्ञानशालाओं का सुचारू संचालन हो रहा है। इस वर्ष आयोजित ज्ञानार्थी परीक्षा में लगभग 265 बच्चों ने भाग लिया। शिशु संस्कार बोध परीक्षा (हैदराबाद स्तरीय) में भाग एक से पांच तक विभिन्न भागों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सभा द्वारा सम्मानित किया गया। अपनी-अपनी इकाई ज्ञानशालाओं में टॉपर्स को मेडल प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया, और परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले सभी ज्ञानार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। वर्ष 2023 और 2024 में भाग-5 पूर्ण करने वाले सभी ज्ञानार्थियों के लिए

दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया।

सभा के तत्वावधान में परामर्शदाता अंजू बैद के मार्गदर्शन तथा आंचलिक संयोजक सीमा दस्साणी, सह संयोजक सरोज लोढ़ा और क्षेत्रीय संयोजक संगीता गोलछा के नेतृत्व में सभी कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुए। परीक्षा व्यवस्थापक सरिता नखत, क्षेत्रीय सहसंयोजक यशोदा कोठारी, सुरभि सिंघी, अरुणा भंडारी, उषा सुराणा और विभिन्न विभागों की संयोजिकाओं का विशेष योगदान रहा।

सभा सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुशील संचेती, परामर्शक लक्ष्मीपत बैद, ज्ञानशाला विभाग संयोजक वीरेंद्र घोषल एवं अन्य पदाधिकारियों ने परीक्षा आयोजन में सक्रिय भूमिका निभाई।

उड़ान कार्यशाला का आयोजन

नवरंगपुर।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल नवरंगपुर द्वारा समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत 'उड़ान - सुनहरा भविष्य - एक कदम स्वावलंबन की ओर' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। अध्यक्ष बॉबी जैन ने सभी का स्वागत करते हुए कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। गरिमा सुराणा ने कहा कि तेरापंथ महिला मंडल की ओर से 'एक कदम स्वावलंबन की ओर'

योजना चलाई गई है ताकि हर महिला सशक्त और आत्मनिर्भर बन सके। वैसे तो आज महिलाएं हर क्षेत्र में आगे हैं लेकिन इसकी जरूरत उन महिलाओं को है जो आज भी पुरुषों पर निर्भर हैं। इसलिए कई ऐसे घरेलू काम हैं जिनके द्वारा महिलाएं आत्मनिर्भर बन सकती हैं। बेकिंग, कुकिंग, टिफिन सेवा, स्टिचिंग, पार्लर जैसे अनेकों कार्य घर से ही किये जा सकते हैं। बॉबी जैन ने और विभा जैन ने मिलकर बेकिंग क्लास के माध्यम से केक और कुकीज बनाना सिखाया। मंत्री रीना जैन ने आभार ज्ञापन किया।



ज्ञानशाला वार्षिक उत्सव का आयोजन



तोशाम

जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा एवं ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अंतर्गत तोशाम ज्ञानशाला द्वारा ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। बच्चों ने ज्ञानशाला गीत संगान से मंगलाचरण किया। ज्ञानार्थियों ने 'हम बच्चे होनहार हैं' गीत की सामूहिक प्रस्तुति दी। प्रशिक्षिका बहनों ने भी सुंदर गीत प्रस्तुत किया।

ज्ञानार्थियों ने वर्णमाला गीत, मंगल पाठ, तीर्थंकर स्तुति और कविता के माध्यम से अलग-अलग प्रस्तुतियां दीं। मुख्य प्रशिक्षिका कमलेश जैन ने ज्ञानशाला के महत्व को समझाते हुए सभी बच्चों को नियमित रूप से ज्ञानशाला में आने की प्रेरणा दी। सभा अध्यक्ष पवन जैन, मंत्री शंकर जैन और शिक्षक पंकज जैन ने ज्ञानशाला के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए।

ज्ञानशाला संयोजक नीरज जैन ने शिशु संस्कार बोध वार्षिक परीक्षा का परिणाम सुनाया, वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की और सभी का आभार व्यक्त किया। तेरापंथ सभा की ओर से सभी बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए गए तथा महिला मंडल द्वारा सभी प्रशिक्षिकाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रशिक्षिका ज्योति जैन ने किया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, बच्चों के अभिभावक और ज्ञानशाला परिवार की विशेष उपस्थिति रही।

वापी

साध्वी राकेशकुमारी जी ठाणा 4 के सान्निध्य में वापी की महावीर रेजीडेंसी में वापी ज्ञानशाला के वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से

कार्यक्रम की शुरुआत हुई। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका पूनम डांगरा एवं वापी सभा के अध्यक्ष इंदर गुलगुलिया ने स्वागत वक्तव्य दिया। महासभा से ज्ञानशाला के आंचलिक संयोजक प्रवीण मेडतवाल, आंचलिक सहसंयोजक राजेश बाफना, वापी ज्ञानशाला क्षेत्रीय संयोजक भावेश हिरण, क्षेत्रीय सहसंयोजक प्रकाश कालिया और वापी ज्ञानशाला संयोजिका छाया कोठारी ने ज्ञानशाला के विकास हेतु महत्वपूर्ण विचार श्रावक समाज के समक्ष प्रस्तुत किए। अंडर-5 के बच्चों ने रोचक प्रस्तुति दी। 'पहचानो कौन' प्रतियोगिता के माध्यम से साधु-साध्वियों के उपकरणों की जानकारी श्रावक समाज को दी गई। ज्ञानार्थियों ने कषाय विषय पर नाटिका के माध्यम से प्रभावशाली प्रस्तुति दी। अभातेयुप मीडिया सलाहकार संजय भंडारी और विजय बोथरा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित गुजरात सरकार के वन मंत्री रमन भाई पाटकर ने तेरापंथ समाज द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों की सराहना की। साध्वी राकेशकुमारी जी ने बच्चों को समाज और राष्ट्र का भविष्य बताते हुए ज्ञानशाला को गणाधिपति पूज्य गुरुदेव तुलसी की अनुपम देन बताया। साध्वी चेतस्वीप्रजाजी ने ज्ञानार्थियों को ज्ञान के विकास की दिशा में प्रेरित करते हुए रोचक प्रसंग प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में सभा, ट्रस्ट, तेयुप, महिला मंडल के पदाधिकारी अपनी टीम के साथ उपस्थित थे। शिशु संस्कार बोध परीक्षा की व्यवस्थापिका प्रीति सांखला ने बच्चों का परिणाम घोषित किया और उन्हें सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन श्रद्धा कोठारी और प्रिया जैन ने किया। कार्यक्रम के विशिष्ट सहयोगी के रूप में रतनी देवी एवं कन्हैया लाल बोथरा उपस्थित रहे। अंत में, ज्ञानशाला की

सहसंयोजिका शीतल डुंगरवाल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

लाडनू

ज्ञानशाला का वार्षिकोत्सव सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी प्रमिलाकुमारी जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र एवं साध्वीश्री के मंगल पाठ द्वारा हुआ। इसके बाद प्रशिक्षिकाओं ने तुलसी अष्टकम का संगान किया। महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड, महासभा सदस्य राजेंद्र खटेड, तेरापंथ युवक परिषद लाडनू अध्यक्ष सुमित मोदी, तेरापंथ महिला मंडल लाडनू मंत्री राज कोचर, अणुव्रत समिति लाडनू संरक्षक शांतिलाल बैद, उपासिका सुशीला बाफना ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के संचालन में जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा मुख्य भूमिका निभाती है। आज के इस कार्यक्रम में भी श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष राजेंद्र खटेड, मंत्री राकेश कोचर, कोषाध्यक्ष महेंद्र बाफना आदि की सम्मानजनक उपस्थिति रही। ज्ञानशाला की नन्ही पौध द्वारा योग-प्रणायाम की सुंदर प्रस्तुति दी गई साथ ही ज्ञानार्थियों द्वारा 'कैसे करे संस्कार का बीजारोपण' एक सुंदर नृत्य के माध्यम से बताया गया। इसके अतिरिक्त काया-6 को एक सुंदर नाटक के द्वारा प्रस्तुत किया गया। साध्वी तेजस्वीप्रभाजी एवं साध्वी रोहिणीप्रभाजी ने भी रोचक प्रस्तुति दी। साध्वी प्रमिलाकुमारी जी के उद्बोधन से ज्ञानशाला को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। स्थानीय सभा द्वारा सभी प्रशिक्षिकाओं व ज्ञानार्थियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में ज्ञानशाला की सभी सक्रिय प्रशिक्षिकाओं का सहयोग रहा। कार्यक्रम का आभार व्यक्त ज्ञानशाला लाडनू संयोजिका अनिता चौड़रिया ने किया एवं कार्यक्रम का सफल संयोजन ज्ञानशाला लाडनू मुख्य प्रशिक्षिका सपना भंसाली ने किया।

ज्ञानशाला वार्षिक परीक्षा आयोजित

गुवाहाटी।

तेरापंथी सभा के अंतर्गत आयोजित ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों की वार्षिक परीक्षा का परिणाम घोषित किया गया। इस परीक्षा में कुल 104 बच्चे उत्तीर्ण हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। ज्ञानशाला के संयोजक रोहित सुराणा एवं प्रशिक्षिका विजयलक्ष्मी

पुगलिया के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रम में ज्ञानार्थी प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। इस अवसर पर प्रमाण पत्र के साथ पुरस्कार देकर बच्चों को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा के साथ संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी, ज्ञानशाला के आंचलिक प्रभारी राकेश जैन, ज्ञानशाला के आंचलिक सह-प्रभारी विकास झाबक

एवं सह-संयोजक रवि कुंडलिया भी उपस्थित थे। परीक्षा व्यवस्थापिका ललिता सामसुखा ने ज्ञानशाला परीक्षा की रिपोर्ट प्रस्तुत की। ज्ञानशाला के संयोजक रोहित सुराणा ने उपस्थित सभी महानुभावों एवं ज्ञानशाला टीम का स्वागत-अभिनंदन किया। कार्यक्रम का संचालन दीपिका कुंडलिया व संगीता बैद ने किया। धन्यवाद ज्ञापन विजयलक्ष्मी पुगलिया ने किया।

स्वागत एवं मंगलभावना समारोह आयोजित

लाडनू।

तेरापंथ धर्मसंघ की परम्परानुसार चाकरी प्रवास सम्पन्न करने पर मुनि रणजीत कुमारजी का मंगलभावना कार्यक्रम एवं मुनि विजय कुमार जी का स्वागत कार्यक्रम जैन विश्वभारती स्थित महाश्रमण विहार में आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुनि जय कुमारजी ने कहा कि विचारण करना मुनि प्रवृत्ति को निर्मलता प्रदान करता है। संत जहां जाते हैं वहां अपने विचारों से श्रावक समाज को अध्यात्म के मार्ग

पर अग्रसर करने का प्रयास करते हैं। इसलिए अधिक से अधिक लोगों को धर्म और अध्यात्म से जोड़ने के लिए निरन्तर विहार करते हैं। तेरापंथ धर्मसंघ में इसकी बहुत अच्छी व्यवस्था है। आगामी वर्ष में चाकरी प्रवास के लिए पधारे मुनि विजय कुमार ने कहा कि गणाधिपति आचार्य तुलसी की जन्म धरा होने के साथ तेरापंथ की राजधानी का गौरव भी लाडनू को प्राप्त है। यहां चाकरी प्रवास करना प्रत्येक तेरापंथ धर्मसंघ के साधु-साध्वी की अभिलाषा होती है। हमें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसके लिए हम आचार्य

प्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। मुनि रणजीत कुमारजी ने कहा कि उनका प्रवास बहुत ही सुखद रहा। जैन विश्वभारती के आध्यात्मिक वातावरण में रहना और वृद्ध संतों की सेवा का यह अवसर मिलना अविस्मरणीय रहेगा।

मुनि कौशल कुमारजी, मुनि मुदित कुमारजी ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर मुनि विजय कुमारजी सहित अन्य संतों का स्वागत किया गया। संयोजन राजेन्द्र खटेड़ ने किया।

दंपत्ति मंत्र आराधना अनुष्ठान का आयोजन

गदग।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गदग द्वारा डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी ठाणा 2 के सान्निध्य में दिव्य दंपत्ति मंत्र आराधना अनुष्ठान का आयोजन किया गया। श्री वर्धमान जैन स्थानक में 71 जोड़ों के साथ सकल जैन समाज के अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने मंत्र आराधना अनुष्ठान का लाभ लिया।

रवि योग के शुभ अवसर पर आयोजित मंत्र अनुष्ठान में डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी ने अनेक अति प्राचीन जैन मंत्रों का महत्त्व बताते हुए

संकल्प के साथ मंत्र उच्चारण करवाया। 'नचिकेता' मुनि आदित्य कुमार जी ने विभिन्न हाथों की मुद्राओं के प्रयोग करवाते हुए जैन मंत्रों का जाप कराया। मंत्र अनुष्ठान में सहभागी आराधकों को संबोधित करते हुए मुनि पुलकित कुमारजी ने कहा- मंत्र मन की प्रसन्नता बढ़ाने वाले होते हैं। शुभ योग, शुभ तिथि, शुभ वार और शुभ दिन में प्रारंभ किया गया मंत्र जाप विशेष फलदाई होता है।

कार्यक्रम के अंत में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश कोठारी ने उपस्थित सभी अनुष्ठान आराधकों का आभार

व्यक्त किया। उत्तर कर्नाटक तेरापंथ सेवा समिति के पूर्व अध्यक्ष जयंतिलाल चोपड़ा ने विचार रखे। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अमित जैन, सभा मंत्री जितेंद्र जीरावला, महिला मंडल अध्यक्ष विजेता भंसाली एवं अन्य कार्यकर्ताओं का विशेष श्रम रहा। स्थानकवासी समाज अध्यक्ष रूपचंद पालरेचा एवं मूर्तिपूजक समाज के पृथ्वीराज संकलेचा, राजू भाई सिंगर एवं जैन समाज के अनेक विशिष्ट जन उपस्थित थे। अनुष्ठान में गदग के अलावा बल्लारी, चित्रदुर्गा, हिरियुर आदि क्षेत्रों के श्रावक भी उपस्थित थे।

पृष्ठ 1 का शेष

मोहनीय कर्म पर विजयय...

यही कारण है कि साधुओं के समक्ष गृहस्थ श्रद्धा से सिर झुकाते हैं, क्योंकि साधु तप, त्याग और संयम के प्रतीक होते हैं। संयम का मूल उद्देश्य मोहनीय कर्म पर विजय प्राप्त करना है। जब यह कर्म क्षीण होने लगता है, तभी व्यक्ति में साधुत्व का प्रादुर्भाव होता है। यही वास्तविक विजय है—अपनी आत्मा को जीतना।

पूज्यवर के स्वागत में जिनेश भाई मेहता तथा श्री मामल भवन की ओर से सुरेन्द्र डेडिया ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

भक्ति और समर्पण हैं...

भक्ति और समर्पण केवल परंपरा का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि यह आत्मोन्नति के महत्वपूर्ण सूत्र हैं। जो यथार्थ और सच्चाई को समझता है और उसी के प्रति भक्ति रखता है, वही सच्ची भक्ति करता है।

लेकिन सत्य बोलना भी विवेकपूर्ण होना चाहिए—हर सत्य बोलना आवश्यक नहीं, लेकिन झूठ बोलना अनुचित है। जब बोलें, तो सत्य ही बोलें।

आचार्यश्री ने उल्लेख किया कि आचार्य रायचंदजी ने मांडवी में छह रात्रियाँ बिताई थीं। करीब 192 साल पूर्व की बात है, 192 वर्षों के पश्चात मेरा आना हुआ है। यह वही भूमि है जहाँ ऋषिराय महाराज के पावन चरण पड़े थे। मुनि डालचंदजी भी मांडवी पधारे थे। मांडवी की जनता में धार्मिक निष्ठा और अध्यात्म की आस्था बनी रहे, यही मंगलकामना है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की वाणी के फलस्वरूप ही आज हम मांडवी आए हैं। आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि धर्म जीवन का मूल आधार है। जीवन में संयम, तप और त्याग होना चाहिए। मनुष्य जन्म का सबसे बड़ा लाभ यही है कि हम धर्म की साधना करें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने

अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्यवर सदैव अध्यात्म की चर्चा करते हैं, भौतिकता की नहीं। वे आत्मा के सौंदर्य को निखारने पर बल देते हैं। वीतरागता प्राप्त करने के लिए क्रोध, मान, माया और लोभ का त्याग आवश्यक है। आचार्यवर एक बहुत बड़े संघ के मार्गदर्शक हैं। संघ का नेतृत्व करना सरल नहीं होता, अनेक प्रकार की समस्याएँ आती हैं, परंतु वे अत्यंत शांतचित्तता और धैर्य से उन्हें हल करने का प्रयास करते हैं। आचार्यवर में कभी झुंझलाहट नहीं आती। जो व्यक्ति स्थितप्रज्ञता में आगे बढ़ जाता है, वह निश्चित रूप से वीतरागता की ओर अग्रसर हो जाता है।

मांडवी के विधायक अनिरुद्ध भाई दवे एवं स्थानीय संघ प्रमुख राजूभाई डोशी ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल ने अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बोलती किताब

अणुव्रत के 11 नियम

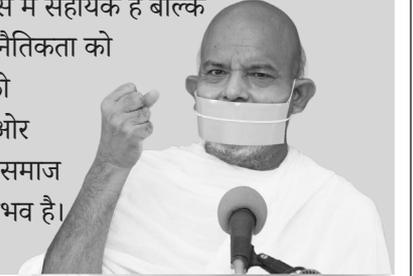


अणुव्रत: आत्मानुशासन और संयम का मार्ग - अणुव्रत एक ऐसा नैतिक आंदोलन है जो आत्मानुशासन और संयम पर आधारित है। यह किसी विशेष धर्म या संप्रदाय से बंधा नहीं है, बल्कि सभी के लिए उपयोगी है। परमपूज्य आचार्य तुलसी ने 1949 में इस आंदोलन की शुरुआत की, जिसमें सत्य, अहिंसा, नशामुक्ति और नैतिक आचरण को अपनाने पर जोर दिया गया। इसका उद्देश्य व्यक्ति के आचरण को शुद्ध करना और समाज को अधिक मानवीय बनाना है।

अणुव्रत आचारसंहिता के प्रमुख सिद्धांत - इस आचारसंहिता में नशामुक्त जीवन, अहिंसा, सत्यनिष्ठा और नैतिकता को अपनाने पर विशेष बल दिया गया है। यह गरीबी और अमीरी की अतिशयता से बचने, संग्रह की सीमा निर्धारित करने और जीवन में संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा देता है। अणुव्रत का उद्देश्य व्यक्ति को सदाचारी बनाकर समाज में सकारात्मक बदलाव लाना है।

सर्वधर्म समभाव और पर्यावरण संरक्षण - अणुव्रत केवल धार्मिक उपदेश नहीं देता, बल्कि यह जीवन के हर क्षेत्र में नैतिकता और संयम की प्रेरणा देता है। यह किसी भी धर्म और विश्वास में हस्तक्षेप नहीं करता, बल्कि केवल मानव कल्याण के लिए नैतिकता को अपनाने पर जोर देता है। यह पर्यावरण-संरक्षण, सामाजिक सौहार्द और व्यक्तिगत शुद्धता को भी प्रोत्साहित करता है।

व्यक्तिगत और सामाजिक उत्थान का मार्ग - इस आचारसंहिता को अपनाकर कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकता है। यह न केवल व्यक्तिगत विकास में सहायक है बल्कि समाज में सद्भाव, शांति और नैतिकता को भी बढ़ावा देता है। अणुव्रत को अपनाकर व्यक्ति सद्गुणों की ओर अग्रसर हो सकता है, जिससे समाज और स्वयं दोनों का उत्थान संभव है।



पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> books@jvbharati.org

आध्यात्मिक मंगल मिलन

तिरुवन्नामलै।

महावीर भवन के परिसर में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि दीप कुमार जी का मूर्ति पूजक सम्प्रदाय के आचार्य देवेन्द्रसागर जी से मंगल मिलन और संयुक्त प्रवचन हुआ।

आचार्य देवेन्द्रसागर जी ने मौन के महत्त्व पर प्रवचन किया और मिलन के प्रसंग पर अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा - बहुत वर्ष पहले आचार्य श्री महाश्रमण जी से दिल्ली में मिलन हुआ था उसके बाद 2 वर्ष पूर्व बोरीवली में मिलन हुआ। आचार्य श्री बहुत मिलनसार हैं। वे जिनशासन की अद्भुत

प्रभावना कर रहे हैं। उन्होंने मुनि दीप कुमार जी से कुछ दिन साथ में प्रवचन करने का, रहने का आग्रह किया।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा- यह निर्ग्रन्थ प्रवचन ही सत्य है और अनुत्तर है। हम सौभाग्य हैं कि हमें जिन शासन प्राप्त हुआ है। संप्रदाय भेद है पर जिन शासन की बात हो वहां हम सब एक हैं।

आचार्य श्री महाश्रमण जी जैन एकता पर बहुत बल देते हैं। हम सभी जिन शासन की प्रभावना में योगभूत बने। मिलन का प्रसंग आल्हादकारी है। यह मिलन तिरुवन्नामलै जैन समाज के लिए ऐतिहासिक प्रसंग बन गया।

श्रवण शक्ति का उठाएं सर्वोच्च लाभ : आचार्यश्री महाश्रमण

नारणपर।

18 फरवरी, 2025

भैक्षव गण के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी मिर्जापुर कुमारशाला से लगभग 12 किमी विहार कर नारणपर के कन्या विद्यालय में पधारे। परम पूज्य ने फरमाया—शास्त्रों में सुनने के महत्व को विशेष रूप से बताया गया है। सुभाषितों को सुनकर तथा आचार्य की अप्रमत्त भाव से सेवा करते हुए शिष्य अनेक गुणों की आराधना करता है और अनुत्तर सिद्धि को प्राप्त कर सकता है।

सुभाषितों को सुनना मानो कानों को श्रेष्ठ और शुद्ध करने जैसा है। यदि किसी व्यक्ति के पास सुनने की क्षमता है, तो उसे यह विचार करना चाहिए कि वह क्या सुने, क्यों सुने और कैसे सुने। मानव शरीर में नौ छिद्र होते हैं, जिनमें से दो कान भी सम्मिलित हैं। इनके माध्यम से ध्वनि को ग्रहण किया जाता है। शरीर अनित्य, अशाश्वत एवं अशुचिमय है, जबकि मोक्ष शाश्वत एवं पवित्र स्थान है।

शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ एवं पाँच कर्मेन्द्रियाँ होती हैं। इनमें से श्रोत्रेन्द्रिय



विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। व्यक्ति को दो कान और एक मुँह प्राप्त हुआ है, जिसका तात्पर्य है कि उसे अधिक सुनना और कम बोलना चाहिए। सुनने का उपयोग स्वयं और दूसरों के कल्याण के लिए होना चाहिए। अच्छे भजन, ज्ञानमयी बातें, जिन शासन की प्रेरणाएँ और आचार्यों की कल्याणमयी वाणी का श्रवण करने का प्रयास करना

चाहिए।

यदि कोई व्यक्ति किसी अच्छी बात को सुनने का अवसर प्राप्त करता है, तो उसे उसे ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। व्यक्ति सुनकर कल्याण को भी जान लेता है और पाप को भी जान लेता है। अप्रमत्त भाव से शास्त्र-वचन सुनने से अपार लाभ प्राप्त हो सकता है। सुनी हुई बातों को अपने जीवन में आत्मसात

करने का प्रयास करना चाहिए। प्रवचन एवं धर्मकथा के श्रवण से जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान मिल सकता है और जीवन की दशा एवं दिशा बदल सकती है। कभी-कभी किसी दुःखी व्यक्ति का दुःख सुनना भी महत्वपूर्ण होता है, तो कभी किसी की सलाह और सीख को ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। यदि हम अपने

चौथा बोल :
इन्द्रियां पांच

1. स्पर्शेन्द्रिय
2. रसनेन्द्रिय
3. घ्राणेन्द्रिय
4. चक्षुरिन्द्रिय
5. श्रोत्रेन्द्रिय

कानों का सही उपयोग करें, तो वे अत्यंत सार्थक सिद्ध हो सकते हैं।

इस अवसर पर समणी ख्यातिप्रज्ञाजी ने पूज्यवर के स्वागत में अपनी भावनाएँ श्रीचरणों में समर्पित कीं। महिला मंडल ने मधुर गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के विद्यार्थियों द्वारा विशेष प्रस्तुति दी गई। हार्दिक खंडोल, विनोदभाई डोषी, सांघवी डोषी, भरतभाई गौर, सुरेशभाई, मेघजीभाई भूरिया एवं प्रिंसिपल अनिलभाई रूपारेल सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने पूज्य प्रवर के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

संवर और निर्जरा से प्राप्त होती है अखंड शांति : आचार्यश्री महाश्रमण

दहींसरा।

19 फरवरी, 2025

जिनवाणी के व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमणजी प्रातः 8 किमी का विहार कर दहींसरा पधारे। आगम वाणी की अमृत वर्षा करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि इस संसार में हर समय कम से कम बीस तीर्थंकर विराजमान रहते हैं, जबकि अधिकतम एक साथ एक सौ सत्तर तीर्थंकर हो सकते हैं।

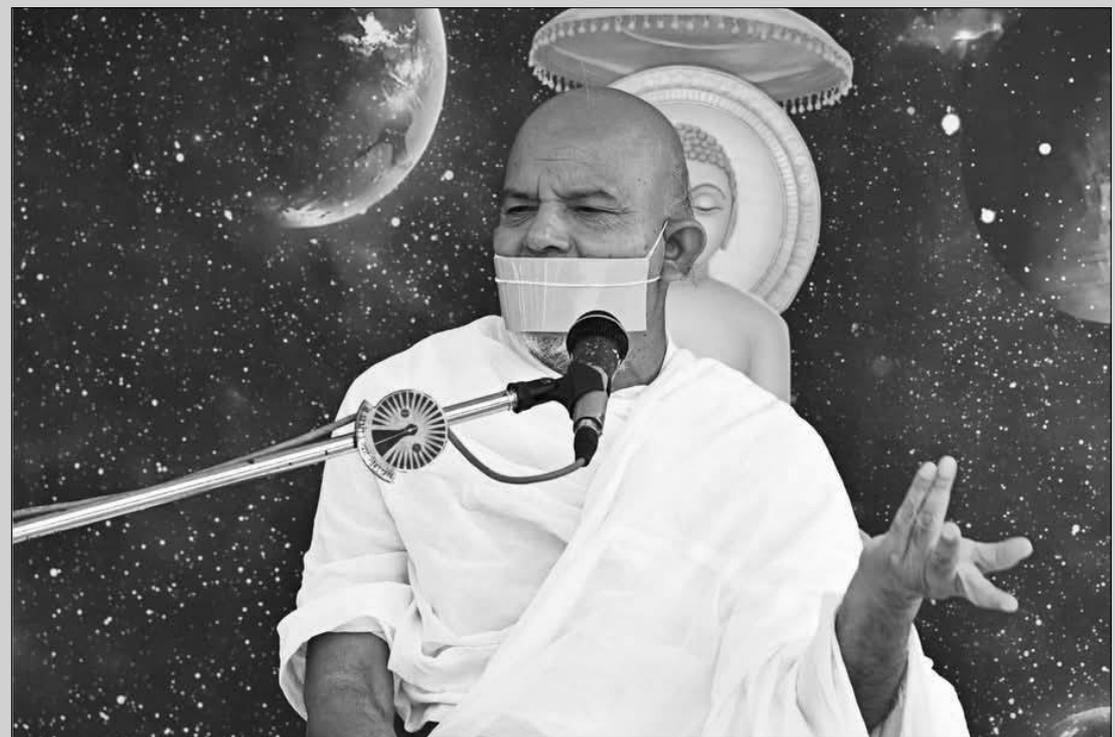
आचार्यश्री ने कहा कि जैसे सभी प्राणियों का आधार पृथ्वी होती है, वैसे ही जितने बुद्ध अतीत में हुए हैं और जितने बुद्ध भविष्य में होंगे, उन सबका आधार शांति है। तीर्थंकर और बुद्ध बनने के लिए केवलज्ञानी होना आवश्यक है, और केवल ज्ञान उसी को प्राप्त होता है जिसके मोहनीय कर्म क्षीण हो चुके हों। मोहनीय कर्म के क्षय होने पर व्यक्ति को सच्ची शांति प्राप्त हो जाती है।

मनुष्य को शांति प्रिय होती है, किंतु गुस्सा, लोभ, अहंकार, भय और चिंता इसके प्रमुख बाधक तत्व हैं। आलस्य भी शांति में विघ्न डालता है। व्यक्ति

के चेहरे को देखकर यह ज्ञात किया जा सकता है कि वह प्रसन्न है या व्यथित। चिंता और चिंता में कोई विशेष अंतर नहीं—दोनों ही जलाने का कार्य करती हैं। चिंता केवल निर्जीव शरीर को जलाती है, जबकि चिंता जीवित व्यक्ति को भीतर से जला देती है। इसलिए चिंता करने के बजाय चिंतन करना चाहिए और समस्याओं के समाधान खोजने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्य प्रवर ने आगे कहा - चित्त में प्रसन्नता एवं क्षमाशीलता होनी चाहिए। अपशब्द सुनकर विचलित नहीं होएं बल्कि धैर्य रखें। निर्भय रहने से शांति प्राप्त होती है। लोभ से बचकर संतोष में रहने का प्रयास करें, क्योंकि संतोष ही सबसे बड़ा धन है और परम सुख का स्रोत है। मानव जीवन का वास्तविक लाभ धर्म और अध्यात्म की साधना में है। संवर-निर्जरा और त्याग-संयम की आराधना से जीवन को सफल एवं सुफल बनाया जा सकता है।

किसी प्रतिकूल परिस्थिति में भी क्रोध न करना व्यक्ति के बड़प्पन को दर्शाता है। जो क्रोध पर नियंत्रण रखता



है, वही धैर्यवान पुरुष कहलाता है। आचार्यश्री तुलसी के जीवन में अनेक संघर्ष आए, किंतु उन्होंने सहनशीलता और शांति को बनाए रखा। ध्यान की साधना का निरंतर अभ्यास करना चाहिए। इस अमूल्य मानव जीवन

को पाप और भोग-विलास में व्यर्थ न गंवाएँ। यह जीवन कल्पवृक्ष, चिंतामणि रत्न और गजराज के समान बहुमूल्य है, अतः इसे व्यर्थ गँवाने के बजाय इसका पूर्ण लाभ उठाने का प्रयास करें। शांति में रहने का निरंतर प्रयास करना

चाहिए, क्योंकि यही सच्चा सुख है।

इस अवसर पर पूज्यवर के स्वागत में कन्याशाला की ओर से मनोज भाई ने अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त कीं। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

भक्ति और विनय से प्राप्त हो सकती है शक्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

कोडाय।

21 फरवरी, 2025

मर्यादा पुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी का कोडाय के बहत्तर जिनालय में मंगल पदार्पण हुआ। अर्हतवाणी का अमृतपान कराते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि यदि व्यक्ति के जीवन में शक्ति होती है, तो वह कुछ विशेष कर सकता है। लेकिन यदि शक्ति न हो, तो कुछ विशेष करना कठिन या असंभव हो सकता है। तीर्थकरों के पास अपार शक्ति होती है। जब अंतराय कर्म क्षीण हो जाते हैं, तो शक्ति के मार्ग में कोई बाधा नहीं रह जाती।

तीर्थकर पूर्णतया अभय होते हैं। जिसने भय को जीत लिया, वह अत्यंत शक्तिशाली बन जाता है। प्रत्येक अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी काल में चौबीस तीर्थकर होते हैं। यह सृष्टि का स्वाभाविक क्रम है कि जंबूद्वीप के भरत और ऐरावत क्षेत्र में तीर्थकरों की संख्या सदैव चौबीस ही होती है। अढ़ाई द्वीप के भरत, ऐरावत और महाविदेह क्षेत्रों में एक साथ कुल 170 तीर्थकर विराजमान हो सकते हैं।

तीर्थकरों की चौबीसी तीन प्रकार की होती है—वर्तमान, अतीत और आगामी। वर्तमान और अतीत के तीर्थकर वंदनीय



हैं, परंतु आगामी उत्सर्पिणी काल के तीर्थकर अभी वंदनीय नहीं हैं, क्योंकि वर्तमान में वे किसी अन्य गति में स्थित हो सकते हैं। सिद्धांततः वे अभी साधु भी नहीं हैं, लेकिन भविष्य में वे तीर्थकर बनने वाले हैं। यह इस संसार का सौभाग्य है कि यहाँ तीर्थकरों का प्रादुर्भाव होता है।

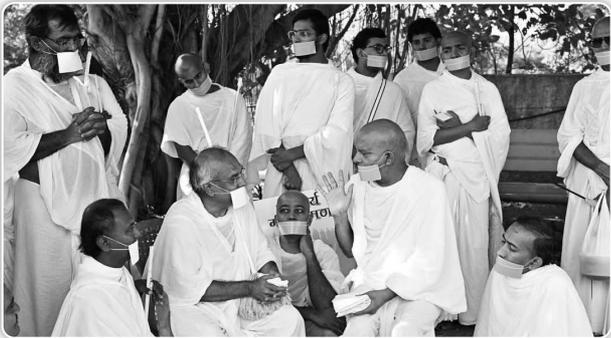
वर्तमान में जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में कोई तीर्थकर विराजमान नहीं हैं। आगामी उत्सर्पिणी के प्रथम तीर्थकर राजा श्रेणिक के जीव होंगे, जो 'पद्मनाभ' नाम से भगवान महावीर की भांति होंगे। वर्तमान में सीमंधर स्वामी महाविदेह क्षेत्र में विराजमान हैं, लेकिन हमें उनके प्रत्यक्ष दर्शन उपलब्ध नहीं

हैं। फिर भी, हम अपने भीतर उनका ध्यान कर सकते हैं। हमें अनंत सिद्धों और तीर्थकरों को वंदन करना चाहिए। प्रत्यक्ष तीर्थकर दर्शन हों या न हों, हमें अपनी आत्मा के दर्शन का प्रयास करना चाहिए। जब व्यक्ति अपनी आत्मा की ओर ध्यान देता है, तो वह स्वयं का कल्याण कर सकता है।

'लोगस्स पाठ' से चौबीस तीर्थकरों की भक्ति, स्तुति और वंदन हो जाता है, जो वर्तमान अवसर्पिणी में हुए हैं। लोगस्स पाठ की एक माला फेरना अत्यंत लाभकारी है। 'गमो सिद्धाणं' का जप करने से अनंत सिद्धों का वंदन हो जाता है। हमारे भीतर भी तीर्थकरों जैसा विकास संभव है। यदि अष्टकर्मों का क्षय हो जाए, तो परमात्मा पद की प्राप्ति संभव है। भक्ति और विनय से कर्म निर्जरा का लाभ मिल सकता है और शक्ति भी प्राप्त हो सकती है।

शक्ति के अनेक स्वरूप हो सकते हैं। मन, वचन और काया की शक्ति होती है। धनबल और जनबल भी शक्ति के रूप हैं। शक्ति का अहंकार न करें, बल्कि उसका उपयोग स्वयं और दूसरों के कल्याण के लिए करें। तपस्या से भी शक्ति प्राप्त की जा सकती है, लेकिन उसका उपयोग किसी को कष्ट देने के लिए नहीं होना चाहिए। यदि सभी शक्तियों के साथ धर्म और अध्यात्म जुड़ जाए, तो इनका सही सदुपयोग संभव हो सकेगा। अपनी शक्ति को छिपाएँ नहीं, बल्कि उसका सदुपयोग करें। मंगल प्रवचन के उपरांत बहत्तर जिनालय से जुड़े कल्पेश भाई ने अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त कीं। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ



विहार
मार्ग में
स्थानकवासी
संप्रदाय के
मुनिवृंद से
मधुर मिलन



पूज्यप्रवर
के
स्वागत में
ज्ञानशाला
के ज्ञानार्थी



माण्डवी के 445वें
स्थापना दिवस
पर आयोजित
'साइक्लोथॉन' के
सभागियों को प्रेरणा
पाथेय प्रदान करते
पूज्यप्रवर